शिक्षा का उत्थान

शिक्षक का सम्मान

शिक्षण संवाद

मिशन शिक्षण संवाद की मासिक पत्रिका

वर्ष-१
अंक-४

माह-अक्टूबर २०१८

मिशन शिक्षण संवाद

शिक्षण संवाद

मिशन शिक्षण संवाद की मासिक पत्रिका

वर्ष-१
अंक-४

माह-अक्टूबर २०१८

प्रधान सम्पादक
श्री विमल कुमार

प्रबन्ध सम्पादक
डॉ. सर्वेष्ट मिश्र
सुश्री ज्योति कुमारी

सम्पादक
प्रांजल सक्सेना
आनन्द मिश्र

सह सम्पादक
डॉ० अनीता मुद्गल
आशीष शुक्ल

छायांकन
वीरेन्द्र परनामी

ग्राफिक एवं डिजाइन
आनन्द मिश्र

विशेष सहयोगी
शिवम सिंह, दीपनारायण मिश्र

आओ हाथ से हाथ मिलाएं
बेसिक शिक्षा का मान बढ़ाएं

मिशन शिक्षण संवाद

व्हाट्सएप एवं सम्पर्क नं0
9458278429

ई मेल :
shikshansamvad@gmail.com

वेबसाइट :
www.missionshikshansamvad.com

अनुक्रमणिका

विषय वस्तु	पृष्ठ सं०
पाठकों के पत्र	7
विचारशक्ति	8–10
मिशन के सिपाही सामुदायिक सहभागिता से बदल रहे स्कूलों की सूरत	11
मिशन गीत	12
बेसिक शिक्षा के अनमोल रत्न	13–16
निन्दक नियरे राखिए	17–19
टी.एल.एम.संसार	20–21
इंग्लिश मीडियम डायरी	22
नवाचार	23–24
शिक्षण गतिविधि	25
सद्विचार	26
प्रेरक–प्रसंग	27
बाल फिल्म	28
बच्चों का कोना	29–30
शीर्षासन	31
माह की सर्वश्रेष्ठ ब्लॉग पोस्ट	32
माह का मिशन	33
महिला अध्यापकों की चुनौतियां	34
कस्तूरबा विशेष	35
शिक्षण तकनीकी	36
सामान्य ज्ञान	37
महत्वपूर्ण दिवस	38
योग विशेष	39
खेल विशेष	40–41
मिशन उपस्थिति	42–43
मिशन हलचल / टीचर्स–क्लब कार्नर	44

शुभकामना संदेश

अपार हर्ष एवं प्रसन्नता का विषय है कि मिशन शिक्षण संवाद परिवार द्वारा प्रतिमाह 'शिक्षण संवाद' पत्रिका का ऑनलाइन प्रकाशन किया जा रहा है। यह पत्रिका बेसिक शिक्षा के क्षेत्र में एक मील का पत्थर साबित होगी तथा विद्यालयों के शैक्षिक एवं भौतिक परिवेश के उत्तरोतर उन्ययन का आधार बनेगी। मिशन शिक्षण संवाद द्वारा अनेकों अनेक शिक्षकों को प्रोत्साहित व बेहतर कार्य करने वाले शिक्षकों को उत्प्रेरित करने का कार्य किया जा रहा है, जो निःसंदेह प्रेरणादायक व दूरगामी परिणाम वाला है। मेरी शुभकामना एवं विश्वास है कि यह पत्रिका बेसिक शिक्षा को एक नई दिशा व दशा देने का कार्य करेगी।

(डा.मनोज कुमार वार्ष्णेय)
प्रवक्ता
जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान आगरा

विमल कुमार
पूर्व माध्यमिक विद्यालय अमराहट,
राजपुर, कानपुर देहात

सम्पादकीय

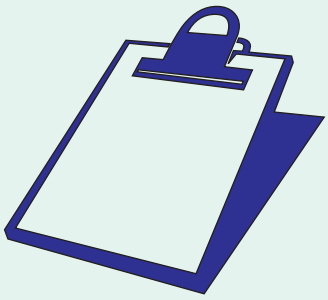

हमने 5 सितम्बर को शिक्षक दिवस मनाया है और 5 अक्टूबर को विश्व शिक्षक दिवस मना रहे हैं। ऐसे दिवसों की महत्ता बचाए रखने को लाखों शिक्षक पूर्ण मनोयोग से अपना कर्त्तव्य निभाने में व्यस्त रहते हैं। शिक्षकों के सम्मान और शिक्षा के उत्थान के लिए मिशन शिक्षण संवाद प्रयास करता रहता है। मिशन के सबसे बड़े सहयोगी हैं वो शिक्षक जिन्होंने शिक्षकत्व को नौकरी के रूप में नहीं अपितु व्यक्तित्व के रूप में अपना लिया है।

बड़ा सरल होता है कोई कदम उठाने की सोचना, बड़ा कठिन होता है उस कदम को मूर्त रूप देना और उससे भी कठिन होता है कदमों को न रोकना। जब ''शिक्षण संवाद'' पत्रिका को आरम्भ करने का सोचा तब मन में कई आशंकाएँ थीं। पता नहीं लोगों को इसका स्वरूप, इसके स्तम्भ आदि पसन्द आएँगे कि नहीं। लेकिन पहली पत्रिका आते ही ये शंकाएँ नेपथ्य में चली गयीं। बची तो केवल उत्साह की पूँजी जिसे हमने पत्रिका के अगले अंक में लगाया और उत्तरोत्तर लगाये ही जा रहे हैं।

आज हम इस स्थिति में आ चुके हैं कि पत्रिका का अनवरत प्रकाशन करते रहें। वह क्षण उत्साहित करे जाता है जब पूछा जाता है कि अगला अंक कब तक आ रहा है। पत्रिका को इतना प्रेम देने के लिए बहुत–बहुत धन्यवाद।

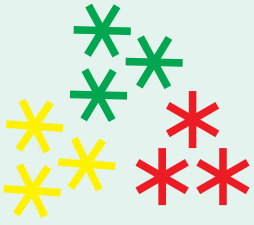

पाठकों के पत्र

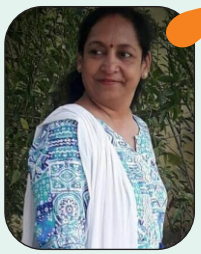

नीलिमा शर्मा
वार्डन
के.जी.बी.वी नगर क्षेत्र
कासगंज

श्रृद्धेय सम्पादक महोदय,

आपके कुशल सम्पादन में 'मिशन शिक्षण संवाद पत्रिका' नित नये आयाम उपस्थित कर रही है। इसमें प्रकाशित सामग्री अत्याधिक रोचक,ज्ञानवर्धक व जन चेतना जागृत करने वाली है। पत्रिका में प्रकाशित लेखों, गीतों व विचारों को पढ़कर मन उत्साहित होने के साथ–साथ ही हम शिक्षकों को अपने दायित्वों का भी भान कराता है।

पत्रिका में चयनित सामग्री उच्च कोटि की है।

पत्रिका में प्रकाशित'मिशन गीत', भारतीय संस्कृति में योग का महत्व',कहानी–––'बहादुर कुसुमा',बच्चों का कोना', सद्विचार, अनमोल रत्न' 'ग्रीन आर्मी का गठन' ,टी.एल .एम संसार' सभी प्रेरणाप्रद रहे।

यह पत्रिका निरन्तर प्रगति के पथ पर अग्रसर रहे।

आपको कोटि–कोटि नमन।

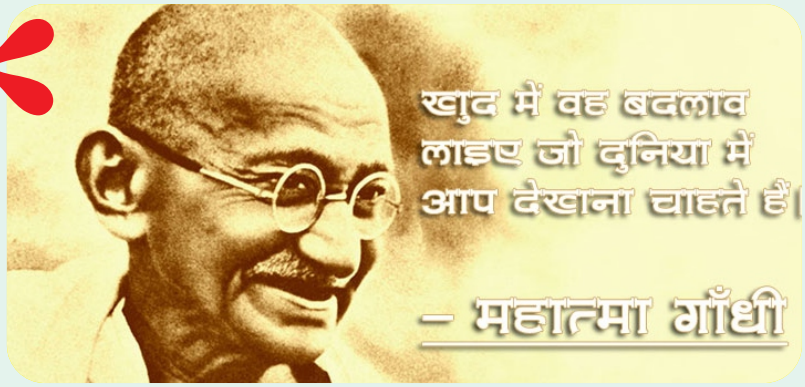

विचारशक्ति

अक्सर अखबार पढ़ने पर जब ये मालूम हो कि कल ये दिवस था तो मन में एक मलाल हमेशा आता कि हम अपने बच्चों को इसके बारे में नहीं बता पाये। इस मलाल को दूर करने के लिए मिशन शिक्षण संवाद की टीम ने दैनिक श्यामपट्ट कार्य की शुरुआत की जो आज अपना 200 शतक भी लगा चुका है। किसी एक व्यक्ति के विचार कैसे दूसरों को लाभान्वित कर देती है, इसकी जिन्दा मिसाल है मिशन शिक्षण संवाद द्वारा चलायी जा रही मुहिम दैनिक श्यामपट्ट कार्य। आज स्थिति ये है कि सुबह पहले व्हाट्सएप्प पे आज का शुभ दिन दैनिक श्यामपट्ट कार्य देखने को हृदय विह्वल होता है नाकि अखबार के लिए।

दैनिक श्यामपट्ट कार्य ——— एक क्रांति

दैनिक श्यामपट्ट कार्य एक क्रांति है जो अध्यापक और छात्र को उन ऊँचाइयों तक ले जाएगा जहाँ छात्रों में एक दिन सर्वांगीण विकास सम्भव होगा। श्यामपट्ट कार्य छात्रों के साथ–साथ अध्यापकों के लिए भी उपयोगी सिद्ध होगा। अगर हम किसी वस्तु का प्रयोग नहीं करते हैं तो उस पर धूल जम जाती है ठीक उसी प्रकार अगर हम अपने ज्ञान का पूर्ण प्रयोग नहीं करते हैं तो हमारा ज्ञान भी धूमिल होता जाता है। दैनिक श्यामपट्ट कार्य उसी धूल को साफ कर रहा है अर्थात जिस ज्ञान को हम अपने अंदर छिपा कर बैठे थे वह ज्ञान आज श्यामपट्ट कार्य के जरिये छात्रों के हित में बाहर आ रहा है। जिस सामान्य ज्ञान को प्राप्त करने के लिए आज सभी अनेकों कोचिंग का हिस्सा बनते हैं साथ मे पैसा खर्च करते है। वहीं दैनिक श्यामपट्ट कार्य आज उन छात्रों को उपलब्ध करा रहा है जिसके लिए वो अन्य साधनों को नहीं अपना सकेंगे। लेकिन आज श्यामपट्ट कार्य की वजह से छात्र व अध्यापक दोनों ही अनमोल ज्ञान प्राप्त कर रहे हैं। जिसका परिणाम बहुत दूरगामी होगा अर्थात इन्हीं बच्चों में से बहुत से बच्चे इसी ज्ञान के सहारे आने वाले भविष्य में बड़े अधिकारी बनेंगे और स्वस्थ वातावरण व समाज को प्रदान करेंगे।

दैनिक श्यामपट्ट कार्य ———एक क्रांति। ये कहने के कई कारण हैं इससे विद्यालय में बहुत से क्रांतिकारी परिवर्तन हुए हैं जैसे——

1. विद्यालय में छात्रों का ठहराव बढ़ना।

Date
28-08-018
प्रा॰वि॰-गोसीपुर
तिन्दवारी, बाँदा
विषय- दैनिक श्यामपट्ट कार्य
प्रकरण- Daily Board Update
मिशन शिक्षण संवाद
सुविचार- "संसार में जितने प्रकार की प्राप्तियां हैं, शिक्षा सबसे बढ़कर है।"
रोचक तथ्य- आजादी से पहले पश्चिम बंगाल तथा बांग्लादेश को मिलाकर बंगाल प्रांत कहते थे। अब बांग्लादेश हमारा पड़ोसी देश है।
सामान्य ज्ञान- गिर राष्ट्रीय उद्यान कौन से राज्य में है?
उत्तर- गुजरात
Todays word
Staircase (सीढ़ी/सोपान)
विशेष/Specil
वर्ग पहेली में परिवार के रिश्ते ढूंढो?

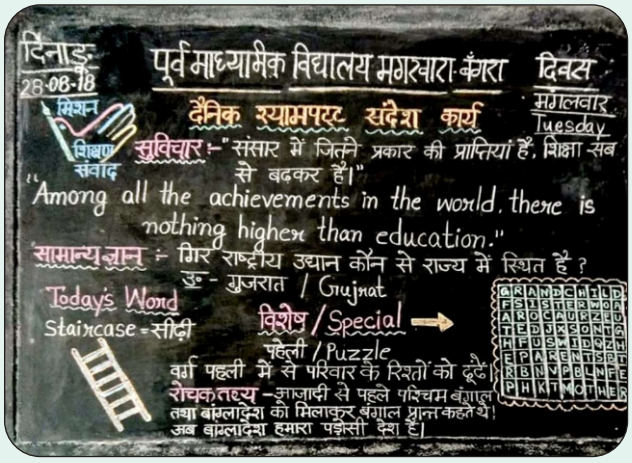

दिनाङ्क 28-08-18
पूर्व माध्यमिक विद्यालय मगरवारा कंगरा
दिवस मंगलवार Tuesday
मिशन शिक्षण संवाद
दैनिक श्यामपट्ट संदेश कार्य
सुविचार:- "संसार में जितने प्रकार की प्राप्तियां हैं, शिक्षा सब से बढ़कर हैं।"
"Among all the achievements in the world, there is nothing higher than education."
सामान्य ज्ञान :- गिर राष्ट्रीय उद्यान कौन से राज्य में स्थित है?
उ- गुजरात / Gujrat
Todays Word
Staircase - सीढ़ी
विशेष / Special
पहेली / Puzzle
वर्ग पहेली में से परिवार के रिश्तों को ढूंढें।
रोचक तथ्य - आजादी से पहले पश्चिम बंगाल तथा बांग्लादेश को मिलाकर बंगाल प्रान्त कहते थे। अब बांग्लादेश हमारा पड़ोसी देश है।

दिनांक 27-09-2018
Thursday - गुरुवार
दैनिक श्यामपट्ट संदेश
सुविचार
विपत्तियों को सहने का बल केवल शिक्षा से ही मिलता है।
मिशन शिक्षण संवाद
आज का शब्द
TOURISM-पर्यटन
विशेष
विश्व पर्यटन दिवस
(WORLD TOURISM DAY)
UPS NEVADA
SHAHGANJ,JAUNPUR

मिशन शिक्षण संवाद
100वाँ दैनिक श्यामपट्ट कार्य
दिन- शनिवार 7 अप्रैल 2018
Thanks 100
सुविचार
"स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मस्तिष्क का निर्माण होता है।" - अरस्तू
स्कूल बनाएँ इतना अच्छा दौड़ा-दौड़ा आये बच्चा
K.G.B.V. Kurara Hamirpur
सामान्य ज्ञान- विश्व के सबसे बड़े महाकाव्य 'महाभारत' के रचयिता कौन है? उत्तर- महर्षि वेदव्यास
महाभारत
महर्षि वेदव्यास
शब्दार्थ- Elephant (हाथी)
पर्यायवाची गज, कुंजर, हस्ति
विशेष- 1- विश्व स्वास्थ्य दिवस (7 अप्रैल)
2- दैनिक श्यामपट्ट का 100वाँ संदेश

2. नामांकन में वृद्धि होना।
3. अभिभावकों का विश्वास बढ़ना।
4. अध्यापकों के सम्मान में वृद्धि।
5. बच्चों में उत्सुकता का बढ़ना और रोज कुछ नया सीखने की ललक।
6. कला क्षेत्र में वृद्धि होना।
7. अध्यापक व छात्र के मध्य एक अटूट प्रेम व सम्मान का सेतु निर्माण होना।
8. सरकारी विद्यालयों के प्रति अभिभावकों का सकारात्मक पहलू देखने को मिला।
9. छात्रों के मध्य स्वस्थ प्रतिस्पर्धा विकसित होना।
10. समाज में विद्यालय की अच्छी छवि का निर्माण होना।
11. छात्रों के साथ साथ अध्यापकों के ज्ञान में भी वृद्धि होना।
12. इसी ज्ञान के बलबूते एक दिन छात्रों में अच्छा भविष्य निर्माण की उम्मीद विकसित हो रही है।
13. सभी विषयों के प्रति लगाव उत्पन्न हो रहा है।
14. अच्छे चरित्र का निर्माण हो रहा है।
15. छात्रों के आत्मविश्वास में वृद्धि हो रही है।
16. नियमितता का विकास हो रहा है।
17. छात्रों में सोचने की क्षमता में वृद्धि हो रही है।
18. भविष्य में होने वाली प्रतियोगिताओं में हिस्सा लेने के लिए नींव का निर्माण हो रहा है।
19. परिषदीय विद्यालय प्राइवेट विद्यालयों को भी आकर्षित कर रहा है।
20. सबसे मुख्य दैनिक श्यामपट्ट कार्य की वजह से मेरे स्कूल का वातावरण बहुत ही खुशनुमा माहौल में परिवर्तित हो चुका है।

अंत मे बस यही कहना चाहती हूँ कि दैनिक श्यामपट्ट कार्य एक दिन मील का पत्थर साबित होगा और परिषदीय विद्यालय की अपनी पहचान व अमिट छाप पूरे समाज पर परिलक्षित होगी।

रीना,
सहायक अध्यापक
प्राथमिक विद्यालय गिदहा
विकास खण्ड –सदर
जिला –महराजगंज।

मिशन के सिपाही सामुदायिक सहभागिता से बदल रहे सरकारी स्कूलों की सूरत

–प्रदेश के हजारों शिक्षकों का ऊर्जा केन्द्र बना चुका है मिशन शिक्षण संवाद।
–अपने नवचारी कार्यों से आम जनमानस, अधिकारियों एवं जनप्रतिनिधियों से सम्मान के पात्र बने मिशन से जुड़े शिक्षक।
–बेसिक शिक्षा विभाग के इतिहास में सकारात्मक बदलाव के लिए स्वर्णाक्षरों में लिखा जाएगा मिशन शिक्षण संवाद और उससे जुड़े नवाचारी शिक्षकों का नाम।

–डॉ0 सर्वेष्ट मिश्र
संपादक/ राष्ट्रपति पदक प्राप्त शिक्षक
प्रधानाध्यापक, आदर्श प्रा0 वि0 मूड़घाट बस्ती
9415047039/sarvestkumar@gmail.com

प्रदेश में महज कुछ वर्षों पहले सरकारी परिषदीय स्कूलों की चर्चा जहां उनकी बदहाली और शिक्षकों के नकारात्मक रवैए के लिए की जाती थी आज उन्हीं परिषदीय स्कलों की चर्चा बहुत ही अच्छे रूप में तथा उनके शिक्षकों की चर्चा बहुत ही सकारात्मक रूप में होने लगी है। ऐसा संभव हुआ है प्रदेश के परिषदीय प्राथमिक विद्यालयों में अपनी पूरी लगन व कर्तव्यनिष्ठा से कार्य करने वाले उन शिक्षकों के बदौलत जिन्होनें न केवल अपने व्यक्तिगत व सामुदायिक सहयोग से अपने स्कूलों के भौतिक परिवेश में चार चांद लगाए हैं बल्कि अपने नवाचारों व गतिविधि आधारित शिक्षा से अपने स्कूल को अलग पहचान दी है। ऐसे नवाचारी कर्मयोगी शिक्षकों को एक बेहतरीन मंच दिया है इन शिक्षकों के अपने मंच मिशन शिक्षण संवाद ने। इस मंच ने ऐसे शिक्षकों को न केवल उनका मनोबल बढाया है बल्कि उन्हें समय समय पर सहारा देने के साथ ही उन्हें व उनके कार्यों को प्रचार प्रसार भी किया है। आज मिशन न केवल अपने प्रदेश में बल्कि दूसरे प्रदेशों में भी अपनी अलग पहचान बना चुका है और लाखों की संख्या मे शिक्षक इस मंच का प्रयोग सीखने–सिखाने की गतिविधियों के केन्द्र के रूप में कर रहे है।

मिशन से जुड़े शिक्षक अपने स्कूलों व्यक्तिगत संसाधनों से उसके भौतिक परिवेश को बेहतर बनाने का कार्य कर रहे है। बच्चों की मूलभूत सुविधाओं जैसे उनके ड्रेस कोड, स्वच्छता व उनकी स्टेशनरी आदि की जरूरतें परी कर रहे है। समुदाय और अभिभावकों को स्कूल से जोड़कर विद्यालय विकास, पौधरोपण व स्वच्छता कार्यक्रमों में उनका सहयोग ले रहे है। अब तो जिला प्रशासन भी मिशन के शिक्षकों के कार्यों से प्रभावित होकर उनके सहयोग में उतर रहा है। प्रदेश के कई जनपदों में जिलाधिकारियों ने ऐसे शिक्षकों के कदम से कदम मिलाकर पूरे जनपद में स्कूलों की बेहतरी के लिए अभियान तक चला रखा है।

वर्तमान में प्रदेश के सभी जनपदों में मिशन से जुडे शिक्षकों ने अने विद्यालयों को ऐसा बनाया है कि आज उन सबकी चर्चा राष्ट्रीय फलक पर हो रही है। प्रदेश के बस्ती जनपद का मूड़घाट, झांसी का बडागांव, गोरखुपर का बसडीला जैसे सैकड़ों ऐसे विद्यालय है जो बेसिक शिक्षा विभाग में सूरज की तरह अपनी आभा बिखेर रहे है।

मिशन के शिक्षकों का मनोबल तबसे और अधिक बढ गया जबसे प्रदेश के बेसिक शिक्षा निदेशक डॉ0 सर्वेन्द्र विक्रम बहादुर सिंह जी, बेसिक शिक्षा परिषद की सचिव श्रीमती रूबी सिंह जी, अपर निदेशक सुश्री ललिता प्रदीप जी सहित शिक्षा विभाग के विभिन्न अधिकारियों ने अपना नैतिक सहयोग और समर्थन देना शुरू किया है। अब तो पूरे प्रदेश में मिशन के कार्यों की चर्चा है और शिक्षकों में मिशन से जुडकर अपने कार्यों को दूसरों के साथ साझा करने के साथ ही बहुत कुछ सीखने सिखाने का कार्य कर रहे है। इन शिक्षकों के बेहतरीन कार्यों का ही परिणाम रहा कि गत माह शिक्षक दिवस पर घोषित अधिकतर राष्ट्रीय और राज्य स्तरीय शिक्षक पुरस्कार मिशन से जुड़े शिक्षकों को ही प्रदान किए गए है। इस बार उ0प्र0 से एकमात्र राष्ट्रीय शिक्षक पुरस्कार के लिए चुने गए शिक्षक और 17 राज्य स्तरीय शिक्षक पुरस्कार प्राप्त करने वाले अधिकांश मिशन मिशन से सीधे जुड़े है।

वर्तमान में प्रदेश के सरकारी प्राईमरी स्कूलों में बदलाव की जो बयार बही है उसके ध्वजवाहक के रूप में मिशन शिक्षण संवाद और उससे जुड़े नवाचारी शिक्षकों का नाम निश्चित रूप से बेसिक शिक्षा विभाग के इतिहास में स्वर्णाक्षरों में लिखा जाएगा।

–डॉ सर्वेष्ट मिश्र

मिशन गीत

मिशन शिक्षण धरातल मिला है मुझे,
जैसे लगता नयी एक दिशा मिल गयी,
कुछ करने की इच्छा जो छिपी थी कहीं,
उन ख्वाहिशों को जैसे मंजिल मिल गयी।
मिशन शिक्षण धरातल मिला है मुझे,.....

चार पन्नों में सिमटे हुए थे हम,
अब किताबों का हमको संसार मिला,
मिशन से चमके कितने सितारे यहाँ,
उनको दुनिया की सारी खुशी मिल गयी।
मिशन शिक्षण धरातल मिला है मुझे .....

जिन्दगी की उस सफर पर निकले हैं हम,
मन में मंजिल की आस लगाये हुए,
लाख बाधाएँ आये तो कुछ गम नहीं,
हम चलें अपने सपने सजाये हुए।
मिशन शिक्षण धरातल मिला है मुझे.....

इस पथ को चुने खुद खुशी से हम,
जिसमें जीत भी हैं जिसमें हार भी हैं,
बढ़ चले इस उम्मीद के साथ हम,
लक्ष्य पाने की चाहत जगाये हुए।
मिशन शिक्षण धरातल मिला है मुझे.....

रोशनी जगमगाती दिखने लगी,
दिव्य ज्योति शिक्षा का जलायेंगे हम,
अब मंजिल कुछ दूर पर ही हैं,
ज्ञान का प्रकाश धरातल पर लायेंगे हम।
मिशन शिक्षण धरातल मिला है मुझे.....

मिशन शिक्षण बना मार्गदर्शक मेरा,
नवाचारी आईडिया सिखाया हमें,
अब उजालों का ऐसा संसार मिला,
हमें विद्या का ऐसा वरदान मिला।

मिशन शिक्षण धरातल मिला है मुझे,
जैसे लगता नयी एक दिशा मिल गयी।

बिधु सिंह स०अ०
प्रा ० वि ० गढ़ी चौखण्ड़ी
बिसरख गौतमबुद्धनगर

बेसिक शिक्षा के अनमोल रतन

अनमोल रत्न–1

अजय कुमार पाल प्र0अ0
प्रा.वि.कछपुरा विख–अछल्दा,
जनपद–औरैया

मैंने 01 जुलाई 2015 को प्रा.वि.कछपुरा – अछल्दा में प्रधानाध्यापक के पद पर कार्यभार ग्रहण किया था। उस समय विद्यालय का भौतिक परिवेश मेरी दृष्टि से उतना बेहतर नहीं था कि ग्रामवासियों छात्र–छात्राओं और अभिभावकों पर एक अच्छा प्रभाव छोड़ सकें। इसके लिए मैंने साथी शिक्षकों के सहयोग से विद्यालय भवन में पुट्टी करवाकर उसकी रंगाई–पुताई करवायी। कक्षाओं में दीवालों पर टी. एल.एम. का चित्रण करवाया, विद्यालय के बाहर की दीवालों पर जल संरक्षण, पौधरोपण व स्वच्छता से सम्बन्धित पेंटिंग करवायी। इस प्रकार से विद्यालय के भौतिक परिवेश को एक नये रूप में परिवर्तित किया। इस कार्य से सभी अभिभावक व ग्रामीण अत्यन्त प्रसन्न हुए।

विस्तार से पोस्ट पढ़ने के लिए क्लिक करें–

http://shikshansamvad.blogspot.com/2018/08/blog-post_46.html

अनमोल रत्न–2

विजयपाल प्र०अ०
अभिनव प्राथमिक विद्यालय नरगहना मूँगरा
बादशाहपुर जौनपुर उ०प्र०

जब मेरी नियुक्ति हुई तब विद्यालय निर्माणरत था। बच्चों को मैंने नीम के पेड़ के नीचे (स्कूल के पास में ही) लगभग 2 महीने पढ़ाया। सत्र 2013–14 में ही नामांकन 200 के ऊपर के ऊपर हो गया। उस समय मेरे विद्यालय में और कोई भी अध्यापक नहीं था। बच्चों को पहले पढ़ने के लिए लगभग 3 किमी दूर विद्यालय जाना पड़ता था। लेकिन मेरे प्रयासों से गतवर्ष से विद्यालय अभिनव विद्यालय के रूप में संचालित हो रहा है। विद्यालय में पढ़ाई के अच्छे स्तर को देखते हुए ग्राम प्रधान अपने दोनों पुत्रों का दाखिला भी 2 वर्ष पूर्व करा चुके है एवं बहुत से अभिभावक जिनके बच्चे कान्वेंट में जा रहे थे अब अधिकतर बच्चों का दाखिला मेरे विद्यालय में हो चुका है। गतवर्ष विद्यालय में नामांकन 360 था।

विस्तार से पोस्ट पढ़ने के लिए क्लिक करें–
http://shikshansamvad.blogspot.com/2018/08/blog-post_61.html

अनमोल रत्न–3

अम्बुज सिंह, इंचार्ज प्रधानाध्यापक, नीतेश सिंह सहायक अध्यापक उच्च प्राथमिक विद्यालय शाहपुर बिनौरा, हरियावां, हरदोई

मई– 2015 में मैं पदोन्नति के पश्चात उच्च प्राथमिक विद्यालय शाहपुर बिनौरा विकास क्षेत्र– हरियावा जनपद– हरदोई में विज्ञान अध्यापक के रूप में पद स्थापित हुआ। विद्यालय की भौतिक स्थिति इतनी खराब थी कि विद्यालय का नाम भी स्पष्ट रुप से नहीं दिखाई पड़ रहा था। विद्यालय अभिलेख भी एक कोने में कूड़े की तरह पड़े हुए थे। हरियाली और पौधे के नाम पर कोई झाड़ी तक नहीं थी। लेकिन कभी ''ऊसर वाला स्कूल'' के नाम से जाने जाने वाला विद्यालय आज एक रमणीय स्थान बन चुका है इस विद्यालय मैं जो भी सुधार हुआ है उसके लिए विद्यालय की पूरी टीम प्रशंसा के पात्र है विद्यालय के सभी अध्यापक एवं छात्र एक टीम के रूप में कार्य करते हैं यह सभी के लिए सौभाग्य है।

विस्तार से पोस्ट पढ़ने के लिए क्लिक करें–

http://shikshansamvad.blogspot.com/2018/08/blog-post_37.html

निन्दक नियरे राखिए

निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा अधिकार कानून लागू हुए 6 वर्ष से अधिक हो गए हैं पर गांधी जी द्वारा 1924 में उठाये प्रश्न आज भी प्रासंगिक हैं। उन्होंने 1924 में यंग इंडिया में लेख के माध्यम से सरकार से प्रश्न किया था ''मैं पूछता हूँ कि क्या सरकार ने सारे बच्चों को प्राथमिक सुविधाएँ उपलब्ध करा दी हैं? स्कूल में पढ़ाने के लिए योग्य और प्रशिक्षित शिक्षक मौजूद हैं? क्या अभिभावकों को शिक्षा के महत्व से अवगत करा दिया है? क्या सभी विद्यालयों में पर्याप्त भौतिक संसाधन उपलब्ध करा दिए हैं और अगर इन सब का उत्तर हाँ में है तो इसके लिए कानून बनाने की कोई आवश्यकता नहीं है और अगर नहीं में है तो कानून बनाने से पहले सरकार को इस प्रश्न का हल ढूँढ लेना चाहिए।''

लगभग 90 साल बाद जब आज शिक्षा को अधिकार घोषित किया गया तब तक भी सरकार इन प्रश्नों का हल नहीं खोज पायी। शिक्षा को अनिवार्य बनाने के लिए शिक्षाविदों और विशेषज्ञों के बहुत से तर्क हैं मसलन शिक्षा निरक्षरता को दूर भगाती है, लोगों को लिखने पढ़ने की दक्षता के साथ विषयों का ज्ञान कराती है, लोगों को अर्थोपार्जन के लिए साधन चुनने की समझ देती है पर क्या केवल इन लाभों के लिए किसी को एक कानून में बाँध लेना उचित है?

अमेरिका के सर्वोच्च न्यायालय ने अनिवार्य शिक्षा का विरोध करते हुए एक फैसले में कहा था कि बच्चे राज्य के हाथ की कठपुतली नहीं हैं जिसे राज्य अपनी इच्छानुसार अपनी ऊँगलियों पर नचाता रहे। इसी सम्बन्ध में प्रसिद्ध शिक्षाविद् जान होल्ट ने कहा है कि अनिवार्य शिक्षा मानवाधिकारों का सरासर उल्लंघन है। मनुष्य को अपने बारे में निर्णय लेने का अधिकार है जब राज्य नागरिकों के बारे में निर्णय का अधिकार अपने हाथों में ले लेता है तब वह नागरिक अधिकारों की कटौती कर रहा होता है। सीखने की आजादी विचारों की आजादी से जुड़ा मसला है जो कि अभिव्यक्ति की आजादी से भी महत्वपूर्ण है। अभिव्यक्ति की आजादी का मतलब यह नहीं है कि अभिव्यक्ति के लिए उसे बाध्य किया जाए।

आजादी से अब तक लगभग अनेकों शिक्षा आयोगों के गठन और इन आयोगों की संस्तुतियाँ अपनाये जाने के बाद भी जब शिक्षा के स्तर में अपेक्षित सुधार न हुआ तो शिक्षा अधिकार अधिनियम 2009 को देश की चरमराती शिक्षा व्यवस्था में एक परिवर्तन के रूप में देखा गया था, पर राज्यों के ढुलमुल निर्णयों कामचोर रवैया के कारण हम अपने को वहीं खड़ा पाते हैं जहाँ से 2009 में चले थे। 6 साल बाद भी अधिकांश राज्य न तो प्रत्येक गाँव में सरकारी स्कूलों को पर्याप्त भौतिक संसाधन उपलब्ध करा सके और न ही प्रत्येक कक्षा के लिए शिक्षक। प्रत्येक विद्यालय में स्वच्छ पेयजल और अलग–अलग बालक–बालिका शौचालय ही उपलब्ध करवा पाने में ही राज्यों की हालत पस्त है। इन 5 वर्षों में जैसे–तैसे केंद्र सरकार द्वारा सर्व शिक्षा अभियान के तहत उपलब्ध कराये गए धन से एक अल्प सुविधायुक्त कामचलाऊ भवन ही उपलब्ध हो सका है पर चिंता यह भी है कि क्या राज्य सर्व शिक्षा अभियान के खत्म होने बाद नए भवनों का निर्माण कर पाएँगे और अपने पुराने बनाये गए भवनों की देख रेख कर सकेंगे?

प्रत्येक कक्षा कक्ष में पर्याप्त फर्नीचर एक अच्छा कार्यालय सुसज्जित प्रयोगशालाएँ और हरे–भरे खेलकूद के मैदान अभी भी इन स्कूलों के लिए एक सपना ही है। यह कानून इन भौतिक सुविधाओं के लिए राज्यों के सामने आग्रह सा करता नजर आता है और राज्य भौतिक सुविधाओं के लिए केंद्र सरकार के सामने हाथ फैलाये नजर आते हैं ऐसे में केंद्र और राज्य के बीच फण्ड की लड़ाई कई राज्यों में आम जनता के बीच आ चुकी है।

शिक्षा अधिकार अधिनियम एक छदम कानून है जिसमें कोई भी जिम्मेदारी लेने को तैयार नहीं है जबावदेह लोगों ने जिम्मेदारियों से बच निकलने को सभी आवश्यक जुगाड़ पहले ही कर ली है। केंद्र अपनी जिम्मेदारी राज्य पर थोप देता है और राज्य अपनी जिम्मेदारी विद्यालय प्रबंध समिति पर। विद्यालय प्रबंध समिति जब कोई स्वतंत्र

निर्णय लेना चाहती है तब राज्य फिर उसे आदेश में बाँधकर अपनी इच्छा पूरी करने को बाध्य कर देता है इस कानून में विद्यालय प्रबंध समिति को विद्यालय विकास से जुडी योजनाएँ बनाने और उन्हें लागू करने का अधिकार प्रदान है पर राज्य स्वयं ही अधिकारों को अतिक्रमित करते हुए बलपूर्वक अपने दिए निर्देशों के पालन को बाध्य कर देता है। विद्यालय से जुडी समस्याओं के निदान की बजाय अध्यापकों को ही जिम्मेदार बनाकर उन्हें जेल तक का भय दिखाया जा रहा है।

अभिभावकों को बेहतर शैक्षणिक परिवेश प्रदान कर आकर्षित करने की बजाय राज्य उन्हें कानून का भय दिखाकर पाल्यों को भेजने को बाध्य करता नजर आता है। शिक्षा अधिकार अधिनियम समाज में हर वर्ग और अंतिम व्यक्ति तक शिक्षा पहुँचाने के लिए केवल निर्देश देता दिखाई पड़ता है पर यह कैसे संभव हो इसका समाधान प्रस्तुत नहीं करता है।

यहाँ प्रश्न यह भी है कि क्या किसी बालक को जबरन शिक्षा लेने के लिए बाध्य किया जा सकता है और अगर कोई ऐसा कर रहा है तो क्या यह अपराध की श्रेणी में नहीं आता है? क्या यह व्यक्ति की स्वतंत्रता के अधिकार का हनन नहीं है? क्या कोई बालक जो विद्यालय में आकर शिक्षा लेने के लिए मनोवैज्ञानिक रूप से तैयार नहीं है उसके मन में जबरदस्ती शिक्षा को भरा जा सकता है? क्या समाज के सभी छात्र प्रारंभिक शिक्षा को स्वीकार कर पा रहे हैं? क्या कक्षा कक्ष के सभी छात्र सामान रूप से सीखने को तैयार रहते हैं? क्या विद्यालय के सभी छात्र बिना न नुकुर विद्यालय आने को तैयार रहते हैं? अगर किसी छात्रों के समूह से दोस्ती कर उनसे इन प्रश्नों के उत्तर जानने की कोशिश की जाए तो ज्यादातर बच्चों को पढ़ना रुचिकर नहीं लगता है। ज्यादातर छात्र अपने माता–पिता के दबाब में स्कूल आते हैं। ज्यादातर छात्रों को पाठ्यक्रम बोझिल लगता है।

शिक्षा के सम्बन्ध में सरकार का नजरिया कुछ और है। सरकार का मानना है कि हर छात्र पढ़ने को लालायित है पर उसे स्कूल नहीं उपलब्ध है। सरकार यह भी मानती है कि हर छात्र का मनोवैज्ञानिक स्तर एक सा है और सभी छात्र एक साथ सभी विषय आसानी से समझ सकते हैं। सरकार यह भी मानती है कि उसके द्वारा बनाया गया पाठ्यक्रम और बताई गयी शिक्षण पद्धति सर्वश्रेष्ठ है इसलिए हर हाल में सभी बच्चों को पढ़ना ही होगा और वही पढ़ना होगा जो सरकार चाहती है और वैसे ही पढ़ना होगा जैसे सरकार चाहती है? इसका साफ अर्थ है कि सरकार शिक्षा प्रदान करने वाले शिक्षक और ग्रहण करने बाले विद्यार्थी के अधिकारों पर अतिक्रमण कर रही है।

वास्तव में आजादी के 7 दशक बाद भी शिक्षा से जुड़ा प्रशासनिक वर्ग यह ही नहीं समझ पाया कि शिक्षा है क्या है और इसको देने का उद्देश्य क्या है? वर्तमान समय में किसी व्यक्ति की नजर में शिक्षा का एकमात्र उद्देश्य सरकारी नौकरी प्राप्त करना भर है ऐसे में उसे शिक्षा से अधिक आवश्यकता नौकरी प्राप्त करने के लिए अच्छे अंकों वाली अंकसूची की होती है और अभिभावक अपने पाल्यों की शिक्षा का प्रबंध इसी उद्देश्य को ध्यान में रखकर करते हैं। वहीं सरकार की नजर में शिक्षा का उद्देश्य सरकारी सिस्टम के लिए आज्ञाकारी कुशल कामगार पैदा करना भर है। दोनों ही स्थितियों में शिक्षा अपने मूल उद्देश्य को पूरा नहीं करती है। शिक्षा का मूल उद्देश्य तो शारीरिक, मानसिक और बौद्धिक रूप से परिपक्व स्वाबलंबी मानव निर्मित करना है। शिक्षा का उद्देश्य मानव जाति में सामाजिक अज्ञानता को दूर कर उन्हें कुरीतियों और जाति बंधन से मुक्त करना है पर कई दशकों से लगातार शिक्षा देने के बाद भी यह व्यवस्था ज्यों की त्यों बरकरार है और इसमें शिक्षा से कोई फायदा नहीं हुआ है, बल्कि शिक्षित लोग ज्यादा जातिवादी और संकुचित विचारधारा के होते जा रहे हैं। सरकार का उद्देश्य है कि गरीब और वंचित वर्ग को शिक्षित कर उन्हें अधिक से अधिक सरकारी नौकरी प्रदान कर समाज की मुख्यधारा में शामिल करना है। पर इससे समाज में वर्षों से पनप रही असमानता कहाँ दूर हुई।

शिक्षा अधिकार कानून में राज्यों को शिक्षा प्रदान करने की शक्तियाँ दे दी गयी हैं पर राज्य केवल विद्यालय का निर्माण कर अपने दायित्व को पूर्ण मान रहा है। राज्यों के पास इस प्रश्न का कोई उत्तर नहीं है कि बिना

नौकरी की गारंटी के एक गरीब अपने बच्चे को शिक्षा क्यों दिलाये। वह तो अपने बच्चे को स्कूल से दूर समाज की विसंगतियों के बीच रखकर सामाजिक शिक्षा देना चाहता है उसे लगता है कि विद्यालय की गणित विज्ञान और भूगोल से अधिक आवश्यक दो वक्त की रोटी कमाने की कुशलता हासिल करना है उसे अपने अनुभवों के आधार पर पता है कि सरकार कुल शिक्षित किये गए युवकों में से केवल 5 प्रतिशत को ही रोजगार देती है उसे यह भी पता है विद्यालय में पढ़ाये जाने वाले इतिहास का दैनिक जीवन में कोई महत्व नहीं है जबकि उसका इतिहास उसे पता है जो ज्यादा महत्वपूर्ण है। ऐसे में दो वक्त की रोटी की जुगाड़ में शरीर को तपाने वाले किसान और मजदूर को किस तरीके से जागरूक किया जाए इसका उत्तर राज्य देने में असमर्थ है और उसकी चुप्पी उसकी मनोदशा बयां करने को पर्याप्त है।

शिक्षा कानून बनने के बाद शिक्षा और अधिक अरुचिपूर्ण और बाध्यकारी हो गयी है बेहतर होता कि हम शिक्षा को व्यक्ति की स्वतंत्रता पर छोड़ देते। विचारकों का मानना है कि शिक्षा के कानून के बाद दलित और वंचित वर्ग को शिक्षा के ज्यादा मौके मिलेगे और समाज में बदलाव होगा, तो क्या इस अधिकार से पहले सरकारी विद्यालयों में दलित और वंचित का प्रवेश निषेध था? क्या इस अधिकार से पहले सभी छात्रों को सरकारी स्कूल में प्रवेश में समस्या थी? क्या इस अधिकार के आने के बाद सभी दलित और वंचित वर्ग के लोग अपने पाल्यों का प्रवेश शत–प्रतिशत करा देंगे और उनकी उपस्थिति शत–प्रतिशत सुनिश्चित करेंगे?
इस कानून के 6 वर्ष बाद भी समाज की मनोदशा में कोई ऐसा विशेष बदलाव नहीं दिखा। अभी भी अध्यापकों को ग्रामीण क्षेत्र में बच्चों को स्कूल तक लाने में उतना ही संघर्ष करना पड़ रहा है जितना इस कानून से पहले करना पड़ रहा था। शिक्षा के लिए उत्सुक व्यक्ति पहले भी अपने पाल्यों को अच्छे विद्यालय में शिक्षित कर रहा था और आज भी कर रहा है। तो इस कानून से समाज की मनोदशा में क्या परिवर्तन हुआ?

अगर कोई व्यक्ति यह कहे कि वह अपने बच्चे को नहीं पढ़ाना चाहता है तो क्या उसे पढ़ाने के लिए बाध्य किया जा सकता है ऐसी स्थिति में क्या वह व्यक्ति बच्चे के अध्ययन में बाधक नहीं बनेगा? क्या ऐसी स्थिति में सरकार का यह कर्तव्य नहीं है कि उस व्यक्ति को अपने पाल्य की शिक्षा के लिए प्रेरित करे। अगर किसी अभिभावक की इच्छा के विरुद्ध कोई छात्र विद्यालय आना चाहे तो इस स्थिति में क्या उपाय है। मनोवैज्ञानिक राथबार्ड का कहना है कि सभी बच्चे शिक्षा प्राप्त करने लायक होते हैं यह केवल एक खोखली अवधारणा है वस्तुतः सभी बच्चों की योग्यता एक जैसी नहीं होती है कुछ बच्चे ऐसे भी होते हैं जिनमें शिक्षित होने की क्षमता ही नहीं होती है ऐसे बच्चों को बार–बार स्कूल लाने से उनके सीखने की गति में रूकावट पड़ती है। बच्चों को जबरन स्कूल भेज देना कोई परोपकार नहीं है राज्य द्वारा सभी को एक साँचे में ठूँसना एक हिटलरी कार्य है।

वास्तव में हम अभी तक ऐसे प्राथमिक विद्यालयों की स्थापना ही नहीं कर सके जो बच्चों को अपनी और आकर्षित कर सके। जिसमें कदम रखते ही बच्चों में उत्साह और उल्लास का माहौल पैदा हो। ऐसा स्कूल में जिसमे कोई पाठ्यक्रम न हो जिसमें बच्चों की इच्छा से शिक्षण हो जिसमे बच्चों को करके सीखने का अवसर मिले। ऐसा स्कूल हो जिसमें आने के लिए बच्चा अपने घर से भागे। ऐसा स्कूल हो जिसकी दीवारें बच्चों को अच्छी लगें ऐसे अध्यापक हों जिनका इंतजार बच्चे स्कूल खुलने से पहले करें और आते ही उनके पैरों से लिपट जाए, ऐसा स्कूल हो जिसमें घंटा बजने की बाध्यता न हो और अध्यापक को पाठ्यक्रम में न बँधना पड़े। ऐसा विद्यालय हो जिसमें प्रवेश के लिए बच्चा अपने घर में जिद करे। ऐसा विद्यालय जिसमें विद्यालय परिवार और अभिभावक योजना बनाने और उन्हें लागू करने के लिए स्वतंत्र हों और सरकार विद्यालय प्रबंध समिति के प्रस्ताव को मानने में आनाकानी ना करे और अगर ऐसा होता है तो शिक्षा अधिकार कानून गैर प्रासंगिक हो जाएगा।

अवनीन्द्र सिंह जादौन
278 कृष्णापुरम कॉलोनी सेक्टर –2
सराय दयानत
इटावा

टी.एल.एम. संसार

पीरियाडिक टेबल कैलेंडर एवं घड़ी

कक्षा–7
विषय–विज्ञान

TLM विवरण – विज्ञान के अंतर्गत पीरियाडिक टेबल के कम से कम 30 तत्वों को याद करने हेतु वर्तमान वर्ष के कैलेंडर के प्रत्येक महीने में दिनांक के स्थान पर उसी परमाणु क्रमांक वाले तत्वों को चिपका कर नए तरीके से कैलेंडर तैयार कर लेते हैं।।

लाभ – इस कैलेंडर द्वारा जब बच्चे प्रतिदिन दिनांक देखते हैं तो इसके साथ साथ उन्हें तत्व भी साथ साथ याद हो जाते हैं।।

कविता तिवारी
यूपीएस अलावलपुर
गाजीपुर।।

My Spelling Maker

English TL M (Best Out of Waste, कबाड़ से जुगाड़)

कक्षा––– 1st to 5th

निर्माण सामग्री– घर पर बेकार पड़ा गत्ता, orange, white and green colours के पेपर (patriotic लुक देने के लिए वैसे कोई भी रंग का चार्ट इस्तेमाल किया जा सकता है), थंब पिन्स, शादी के पुराने कार्ड, फेविकोल sketch pens.

My Spelling Maker की सहायता से बच्चे खेल खेल में रुचिपूर्ण तरीके से स्पेलिंग को बनाना सीखेंगे।

बनाने की विधि– इसे बनाना बहुत ही सरल है एक गत्ते का बड़ा सा टुकड़ा लेकर उस पर तीन रंग के पेपर चिपका दिए फिर शादी के पुराने कार्ड को त्रिकोण आकार में काट कर पंच कर लिया उस पर अल्फाबेट्स व स्पेलिंग लिख दी गत्ते पर थंब पिन्स लगा दी। यह टीएलएम बच्चों के शब्दकोश को सुरुचिपूर्ण ढंग से सीखने में मदद करता है।
यह कक्षा 1 से लेकर कक्षा पांच तक के बच्चों के लिए उपयोगी है इसे हिंदी, इंगलिश व संस्कृत भाषा के लिए भी बनाया जा सकता है।

अंजू सचान
प्राथमिक विद्यालय रौतयाना जौरा
मोठ, झांसी, उत्तर प्रदेश।

English Medium Diary

English Medium Primary School: Essential but Challenging

Objectives Behind Establishment- It was the best step of Government to open English medium school in rural areas. This is the time of world globalization. Every country is trying to make itself more and more powerful.For this ,Every country wants to prepare its citizen more attentive towards the changes around it and needs of its own. Having this view ,our government is now want to run more English schools to fulfil country's present needs, though some private schools were doing this job,but they are not adequate.

Obstacles- In this field, there are so many obstacles like ideology,old traditions and customs. People generally do not think the importance of this language in rural areas.

Challenges - The first challenge is to create such environment, and to prepare people to think about ENGLISH.

Requirements- We need many things to develop an environment which can enhance the learning of English LANGUAGE. For this,we should avail Proper infrastructure, audio video devices, we must take clues which are present in local areas.

Awareness campaign- special awareness campaign shoud be run to satisfy the people, to crush their fears and worries. We should take some people among them for this purpose.

Trainings- Government should provide special trainings, debates, workshops, seminars for the teachers involved in this job.

Residential facilities - In such schools If the residential facilities for the teachers are provided, the outcomes would be more than expectations.

Craft work and folk arts can do a miracle in achieving the main objectives. So the Government should promote the use of such basic things in English Medium Primary Schools. Encouragement Appreciation and Emotional attachment can make the learning easier and fruitful.

Ram Narayan Pandey
EMPS Baglai, Block- Chitrakooot ,
Distt. Chitrakoot

नवाचार

सितारे जो बने ध्रुव तारे

नवाचार का उद्देश्य : विद्यालय में नामांकन के सापेक्ष ठहराव में वृद्धि करना।
नवाचार कब से विद्यालय में लागू किया गया : 1 अगस्त 2018 से विद्यालय में नवाचार शुरू किया गया।

नवाचार का विवरण : पूर्व माध्यमिक विद्यालय ढक्का हाजी नगर में 6 सितम्बर 2016 को मेरी नियुक्ति विज्ञान–गणित शिक्षक के रूप में हुई। विद्यालय में मेरी नियुक्ति से पूर्व दो अध्यापक कार्यरत थे। मेरा यह विद्यालय हमारे ब्लॉक सैदनगर के सबसे बुरे विद्यालयों में से एक था। विद्यालय में वर्तमान में 31 छात्र और छात्राएँ नामांकित हैं। लेकिन विद्यालय में छात्र उपस्थिति 60% से अधिक नहीं हो पाती थी। प्रधानाध्यापक और हम दोनों शिक्षकों को बच्चों को बुलाने के लिए बार–बार उनके घर जाना पड़ता था। तब कहीं जाकर वो विद्यालय आते थे। जुलाई माह में मेरे मन में एक विचार आया क्यों ना ऐसा कोई उपाय किया जाए की हमें बार–बार बच्चों को बुलाने न जाना पड़े और वो नियमित विद्यालय आयें। जुलाई माह के अंत में बच्चों के सामने एक प्रस्ताव रखा कि जो बच्चे अगस्त माह में बिना किसी गैरहाजिरी के विद्यालय आयेंगे। उन बच्चों को सितम्बर माह की शुरुआत में पुरस्कृत किया जायेगा। साथ में यह शर्त भी रखी कि कोई भी बच्चा अपनी हाजरी लगवाने नहीं आएगा, अगर वह विद्यालय पढ़ने आएगा तभी वो उपस्थित माना जाएगा और शुरुआत हो गयी नवाचार "सितारे जो बने ध्रुव तारे" की। मेरा विद्यालय अल्पसंख्यक बाहुल्य (मुस्लिम) इलाके में है। अगस्त माह में ईद का पर्व भी आया। रामपुर में ईद के पर्व में बच्चे अपने रिश्तेदारों के घर चले जाते हैं, लेकिन इस बार बहुत से बच्चे ईद के बाद विद्यालय आये। रामपुर में लगातार वर्षा के कारण कुछ बच्चों के घर भी ढह गये, लेकिन बच्चों ने फिर भी विद्यालय आने का पूरा प्रयास किया । 31 अगस्त को जब कक्षा 6, 7 और 8 की उपस्थिति पंजिका देखी गयी तो 5 बच्चे बिना कोई गैरहाजरी के लगातार अगस्त माह में विद्यालय आये। इस नवाचार से विद्यालय की उपस्थिति 80% से भी अधिक रहने लगी। एक सप्ताह तक 31 में से 30 बच्चे लगातर विद्यालय आये। सितम्बर की शुरुआत में लगातार विद्यालय आने वाले 5 बच्चों को बैज लगाकर ध्रुव तारों से संबोधित किया गया। सितम्बर माह में अगर ये बच्चे लगातार विद्यालय नहीं आये और अन्य बच्चे लगातार विद्यालय आये तो इन 5 बच्चों को अपने बैज लगातार आने वाले बच्चों को देने होंगे। ऐसा इसलिए किया गया है ताकि ये बच्चे हर माह लगातार विद्यालय आने की कोशिश जारी रखेंगे और बाकि बच्चों में भी ध्रुव तारे बनने की प्रतिस्पर्धा बनी रहेगी।

नवाचार से विद्यालय को लाभ : 1. विद्यालय में नामांकन के सापेक्ष ठहराव में वृद्धि हुई।
2. बच्चों की ठहराव दर 60% से बढ़कर 96% तक पहुँच गयी।

3 . बच्चों को उनके घर जाकर बुलाने वाली समस्या हल हो गयी।

4. 14 अगस्त को जिला प्रशासन, रामपुर द्वारा आयोजित कार्यक्रम "एक शाम शहीदों और स्वच्छता के नाम" में जिलाधिकारी श्री महेंद्र बहादुर जी और श्री सूर्यपाल (दर्जा मंत्री, उ ० प्र० सरकार) द्वारा विद्यालय को 80% से अधिक लगातार उपस्थिति के कारण सम्मानित किया गया।

नवाचारक का नाम : दीपक पुंडीर (स० अ०)
पूर्व माध्यमिक विद्यालय ढक्का हाजी नगर
ब्लॉक –सैदनगर, जिला –रामपुर

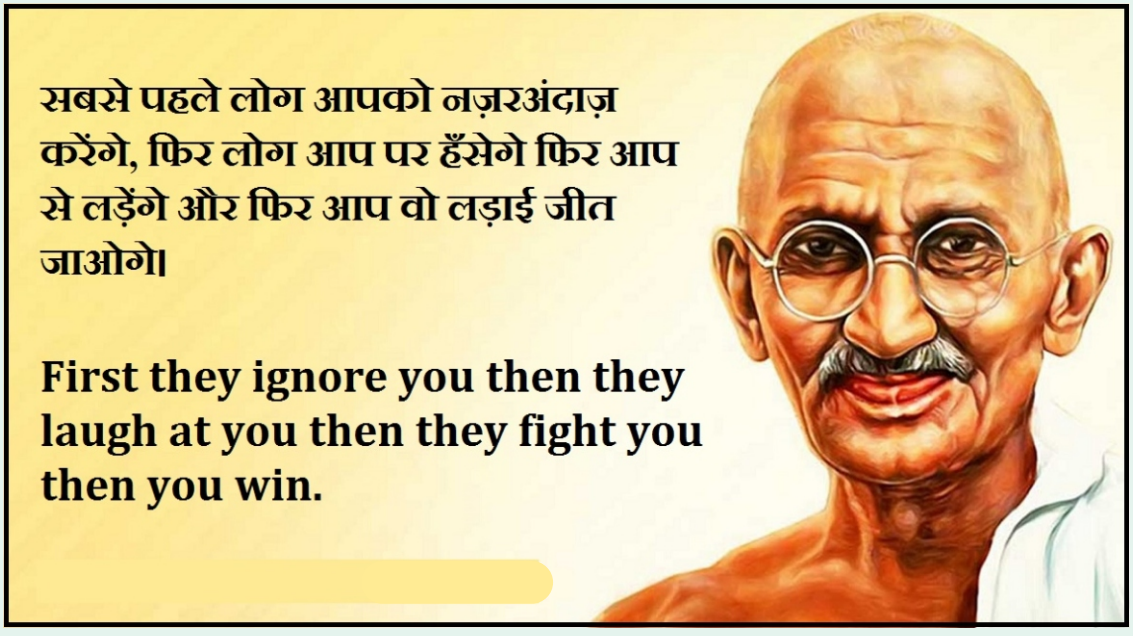

शिक्षण गतिविधि

कक्षा 1 में बच्चों को फलों के नाम आसानी से याद करने के लिए कक्षा एक के 10 बच्चों की सहभागिता से इस गतिविधि को कराया गया। बच्चों को पेपर से बनी फलों की पोशाक पहनायी गयी और बच्चों को एक–एक करके क्लास में लाये। इस गतिविधि से दूसरे बच्चे जो कक्षा में है बच्चे का नाम लेकर उस फल का नाम लेंगे। इस प्रकार बच्चे पाँच फलों के नाम नहीं बल्कि दस के याद करेंगे और बच्चे की पोशाक से उन्हें फल भी याद रहेगा कि वो बच्चा क्या बना था।

जो बच्चे फल बने हैं वो एक लाइन उस फल के बारे में बोलेंगे फिर बाकि बच्चे उसे दोहराएँगे।

जैसेः–अनार के दाने लाल लाल

आमः–मैं हूँ फलों का राजा आम।

यतिका पुंडीर
सहायक अध्यापिका
प्राथमिक विद्यालय कमालपुर
ब्लॉक जनपदः–रजपुरा,मेरठ

सद्विचार

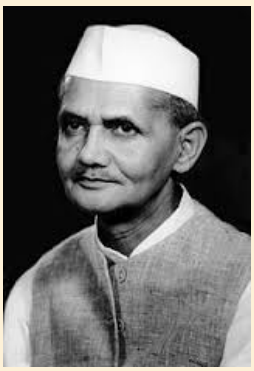

लाल बहादुर शास्त्री जी के विचार

1. हम सभी को अपने–अपने क्षेत्रों में उसी समर्पण, उसी उत्साह और उसी संकल्प के साथ काम करना होगा जो रणभूमि में एक योद्धा को प्रेरित और उत्साहित करती है और यह सिर्फ बोलना नहीं है, बल्कि वास्तविकता में करके दिखाना है।

2. विज्ञान और वैज्ञानिक कार्यों में सफलता असीमित या बड़े संसाधनों का प्रावधान करने से नहीं मिलती, बल्कि यह समस्याओं और उद्देश्यों को बुद्धिमानी और सतर्कता से चुनने से मिलती है और सबसे बढ़कर जो चीज चाहिए वो है निरंतर कठोर परिश्रम समर्पण की।

3. आजादी की रक्षा केवल सैनिकों का काम नहीं है। पूरे देश को मजबूत होना होगा।

4. हमारी ताकत और स्थिरता के लिए हमारे सामने जो जरूरी काम हैं उनमें लोगों में एकता और एकजुटता स्थापित करने से बढ़कर कोई काम नहीं है।

5. भ्रष्टाचार को पकड़ना बहुत कठिन काम है, लेकिन मैं पूरे जोर के साथ कहता हूँ कि यदि हम इस समस्या से गंभीरता और दृढ संकल्प के साथ नहीं निपटते तो हम अपने कर्तव्यों का निर्वाह करने में असफल होंगे।

6. यदि कोई एक व्यक्ति भी ऐसा रह गया जिसे किसी रूप में अछूत कहा जाए तो भारत को अपना सिर शर्म से झुकाना पड़ेगा।

7. मेरी समझ से प्रशासन का मूल विचार यह है कि समाज को एकजुट रखा जाए ताकि वह विकास कर सके और अपने लक्ष्यों की तरफ बढ़ सकें।

8. हम सिर्फ अपने लिए ही नहीं बल्कि समस्त विश्व के लिए शांति और शांतिपूर्ण विकास में विश्वास रखते हैं।

9. देश के प्रति निष्ठा सभी निष्ठाओं से पहले आती है और यह पूर्ण निष्ठा है क्योंकि इसमें कोई प्रतीक्षा नहीं कर सकता कि बदले में उसे क्या मिलता है।

10. लोगों को सच्चा लोकतंत्र या स्वराज कभी भी असत्य और हिंसा से प्राप्त नहीं हो सकता है।

11. कानून का सम्मान किया जाना चाहिए ताकि हमारे लोकतंत्र की बुनियादी संरचना बरकरार रहे और वो मजबूत भी बने।

प्रेरक प्रसंग

मित्रों एक बार एक अंग्रेज ने महात्मा गांधी को पत्र लिखा। उसमें गालियों के अतिरिक्त कुछ था नहीं। गांधीजी ने पत्र पढ़ा और उसे रद्दी की टोकरी में डाल दिया। उसमें जो आलपिन लगा हुआ था उसे निकालकर सुरक्षित रख लिया। वह अंग्रेज गांधीजी से प्रत्यक्ष मिलने के लिए आया। आते ही उसने पूछा– महात्मा जी! आपने मेरा पत्र पढ़ा या नहीं? महात्मा जी बोले– बड़े ध्यान से पढ़ा है। उसने फिर पूछा– क्या सार निकाला आपने? महात्मा जी ने कहा– एक आलपिन निकाला है। बस, उस पत्र में इतना ही सार था। जो सार था, उसे ले लिया। जो असार था, उसे फेंक दिया। मित्रों हम शिक्षकों के जीवन में भी कई बार ऐसा होता है जब हमें कटघरे में खड़ा कर दिया जाता है उस समय हमें यहीं तय करना होता है कि हमारे लिये क्या सार है और क्या असार है हमें हमेशा सार को सँभालना है और असार को डस्टबिन में डालना है। हमें कभी असार से विचलित नहीं होना है क्योकि असार हमें हमेशा विचलित करने की कोशिश करता रहेगा हमें बिना विचलित हुये सार की तलाश करते रहना है। जब कभी परिस्थितियाँ विचलित करने लगें तो हमें प्रतिफल के बजाय अपने कर्तव्यों

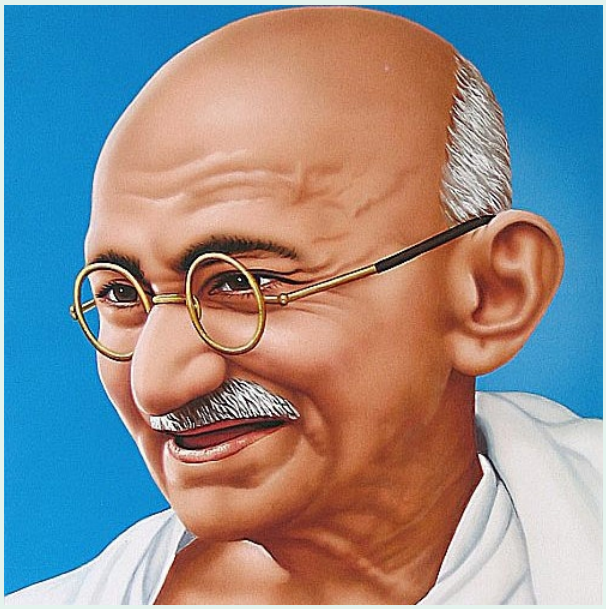

के प्रति दृढ़ रहना है क्योंकि वही हमारे जीवन के सच्चे सार हैं। दोस्तों ये सार और असार घनिष्ठ मित्र हमेशा हमें साथ में ही मिलेंगे कभी किसी की मात्रा कम तो कभी किसी की ज्यादा बस हमें अपने अन्दर वो नजर और नजरिया पैदा करना जो सार और असार में विभेद कर सके और जब हमें हमारा सार मिल जाये तो बस उसे सँभाल लेना है क्योंकि वही हमें जीवन पथ पर आगे बढ़ने में मदद करेगा और हाँ मित्रों! असार को डस्टबिन में ही डालें क्योंकि स्वच्छ भारत! स्वस्थ भारत! सुन्दर भारत! जय हिन्द जय भारत

श्वेता सिंह (स0अ0)
प्रा0वि0 हरिहरनगर,
बेरूआरबारी, बलिया(उ0प्र0)

बाल फिल्म

छोटा चेतन

बच्चों के बचपन में खेल और कहानियाँ जितनी आवश्यक हैं उतनी ही आवश्यक हैं बालफिल्म। बालफिल्म बच्चों की कल्पना को एक नयी उड़ान देती हैं। आज हम ऐसी ही एक बालफिल्म कि चर्चा करेंगे जो सम्भवतया भारत में पहली 3डी बालफिल्म कही जाएगी। ये फिल्म 1984 में मलयालम भाषा में बनी थी और इसकी लोकप्रियता के कारण 1998 में इसे हिन्दी में भी रिलीज किया गया। फिल्म का नाम है—छोटा चेतन।

फिल्म में लक्ष्मी, राजू और चिंटू नाम के तीन दोस्त होते हैं जिन्हें विद्यालय जाते समय उनके रिक्शेवाला एक भवन के बारे में बताता है कि उस भवन में एक छोटा चेतन नाम का बच्चा रहता है जो अपने जादू से कुछ भी कर सकता है। बच्चों को और क्या चाहिए होता है यही न कि चुटकी बजाते ही उनकी हर इच्छा पूरी हो जाए। बस इसीलिए वो छोटा चेतन से मिलने चल देते हैं। उस भवन में कैद छोटा चेतन को जब वो स्वतंत्र कराते हैं तो छोटा चेतन उनका मित्र बन जाता है।

अब तो जादूगर मित्र के सहारे लक्ष्मी, राजू और चिंटू की मौज आ जाती है। छोटा चेतन के जादू से कभी उनका रिक्शा तेज चलता है तो कभी खडूस बायोलॉजी टीचर बच्चों के प्रति संवेदनशील व्यवहार करने लगते हैं। लेकिन इन तीनों की हर इच्छा पूरी करने वाले छोटा चेतन को ये डर सदैव लगा रहता है कि कहीं उसे तांत्रिक पुनः न कैद कर ले। एक दिन छोटा चेतन को पता चलता है कि वो अब तांत्रिक से नहीं बच पाएगा। ऐसे में वो अपने तीनों बालमित्रों से उनकी एक–एक इच्छा पूरी करके विदा लेने की बात करता है। तब कोई चॉकलेट का पहाड़ माँगता है तो कोई खिलौने का ढेर। फिल्म का अंत क्या हुआ ये जानने के लिए आप फिल्म देखेंगे तभी आपको आनन्द आएगा।

छोटा चेतन की डीवीडी आपको अमेजन पर मिल जाएगी। तो इस माह किसी न किसी बालसभा के दिन आप बच्चों को छोटा चेतन दिखा रहे हैं न?

बच्चों का कोना

अपना घर

अम्मा मुझे एक बात बताओ,
क्या तुमने देखा अपना घर?

हाँ बिटिया मैंने देखा है,
क्या अब तक तू है अनजान?
आज बैठ मैं तुझे सिखा दूँ,
अपने घर का सारा ज्ञान!
ना ना मम्मा हाँ–हाँ अम्मा
अब अम्मा एक बात बताओ,
क्यूँ ठंडा रहता है घर?
ठंडी मंद सुगंध हवाएँ,
उत्तर में है बर्फ का घर!
दक्षिण दिशा में मेरी बिटिया,
सुंदर बहता है जलधर!
इसीलिए मेरी बिटिया,
ठंडा रहता अपना घर!
हाँ–हाँ अम्मा जी–जी मम्मा !
अब अम्मा एक बात बताओ,
फिर क्यूँ गर्मी लगती है?
ऋतुएं जब लेती अंगड़ाई,
गर्म हवाएँ चलती हैं,
उसी समय मेरी बिटिया रानी,
धरती तवे सी तपती है!
यही तपन मेरी बिटिया रानी,
गर्मी पैदा करती है!
जी–जी मम्मा अम्मा
अम्मा तुम कितनी अच्छी हो,
कितनी बातें कर डालीं,
पर ना बोला घर का नाम!
जल्दी बोलो सच–सच बोलो,
क्या है अपने घर का नाम?
तेरा साथ है कितना सुंदर,
सदा रहे तू बनी अमर!
मेरी प्यारी बिटिया रानी ,
भारतवर्ष है अपना घर!
हाँ–हाँ अम्मा जी–जी बिटिया

रतन लाल गंगवार,
प्रधानाध्यापक
प्राइमरी स्कूल नौगवां संतोष,
विकास खण्ड–बिलसंडा,
जनपद–पीलीभीत।

विज्ञान शिक्षक

तुम विज्ञान शिक्षक हो, तनिक न हिम्मत हारो,
अपने तकनीकी ज्ञान से, नित नए काज सँवारो।

देखो आपने ही फैलाया, हर जगह प्रकाश है,
धरती नापी, सागर नापा, नाप लिया आकाश है।
मानव हित के मूल मन्त्र को, बार–बार उच्चारो,
तुम विज्ञान शिक्षक हो, तनिक न हिम्मत हारो।

भूखी जनता, नयी आशा से तुम्हें निहार रही है,
प्यास से व्याकुल दुनिया, तुम्हें ही पुकार रही है।
नवीन तकनीकी प्रयोग कर, प्रदूषण से उबारो,
तुम विज्ञान शिक्षक हो, तनिक न हिम्मत हारो।

यद्यपि तुम्हारे जीवन में, चुनौतियाँ बहुत बड़ी हैं,
इस स्वार्थी मानव ने, की समस्याएँ खूब खड़ी हैं।
मानव जाति संकट में है, तुम इसको शीघ्र उबारो,
तुम विज्ञान शिक्षक हो, तनिक न हिम्मत हारो।

मानव को, अब अपना नजरिया बदलना होगा,
प्राकृतिक संसाधनों का, संरक्षण करना होगा।
पेड़–पौधों से भूमि को, सुसज्जित करना होगा,
ओर भटके हुए मानव की अब तो भूल सुधारो।

तुम विज्ञान शिक्षक हो, तनिक न हिम्मत हारो,
अपने तकनीकी ज्ञान से, नित नए काज सँवारो।

प्रदीप कुमार,
विज्ञान सह–समन्वयक,
विकास खण्ड–ठाकुरद्वारा
जनपद–मुरादाबाद।

बच्चों का कोना

नटखट बंकू

बंकू बंदर बहुत ही शैतान था दिन भर उछल –कूद करता रहता सबको बहुत परेशान करता उसे सबको परेशान करने में बहुत मजा आता है।
एक दिन बंकू ऐसे ही शैतानी करते हुए..जंगल में घूम रहा था और सबको परेशान करके बड़ा खुश हो रहा था ....तभी अचानक
पेड़ो पर कूद –फाँद करते समय बंकू एक गहरे गड्ढे में गिर गया ....अपने को परेशानी मे घिरा देखकर बंकू जोर –जोर से रोने लगा।
रोने की आवाज सुनकर जंगल के और जानवर वहाँ इकट्ठा हो गये और बंकू को रोता देखकर सभी हंसने लगे ।
बंकू को उनकी हंसी बहुत बुरी लग रही थी वह सोच रहा था कि मेरी मदद करने की बजाय हॅस रहे हैं ।
बंकू ने कहा ...दोस्तों मेरी मदद करो... मुझे यहाँ से निकलो ...
और जानवरों ने कहा ..क्यों बंकू तुम भी तो यही करते हो..अब क्यों रो रहे हो?
बंकू ने सभी से हाथ जोड़कर माफी माँगी और कहा ...दोस्तों मुझे माफ कर दो ...मै अब कभी ऐसा नहीं करूँगा ...
सभी जानवरों ने बंकू की परेशानी देखकर बंकू को गड्ढे ने निकाला
और कहा कि हम सबको एक–दूसरे की मदद करनी चाहिए और प्यार से रहना चाहिए ।
शिक्षा–हमें एक दूसरे की मदद करनी चाहिए और परेशानी मे किसी की हॅसी नही उड़ानी चाहिए ।

हर्षिता
कक्षा–6
विद्यालय– –पूर्व माध्यमिक विद्यालय नया बॉस ,
राया मथुरा

निष्ठा मैडम

एक आदर्श शिक्षक की परिभाषा क्या होती है इस पर अनेक विद्वानों के अनेक मत हैं। कोई एक सर्वमान्य परिभाषा है ही नहीं। इसीलिए कई शिक्षक अपनी सुविधानुसार आदर्श शिक्षक की अपनी परिभाषा गढ़ने का प्रयास करते हैं। निष्ठा मैडम भी ऐसी ही हैं। उनके लिए समय से विद्यालय आना और विद्यालय समय में पूर्ण मनोयोग से शिक्षण करना ही आदर्श शिक्षक का श्रेष्ठ मानक है। लेकिन जब उनके हेडमास्टर सेवानिवृत्त हुए और वो इंचार्ज बनीं तथा विद्यालय एकल हुआ। तब उनके शिक्षण में सूचनाओं से लेकर एमडीएम के पचड़े व्यवधान डालने लगे। परन्तु इन विपरीत परिस्थितियों में भी न तो उन्होंने विद्यालय समय से पहुँचने में कोई लापरवाही बरती न ही शिक्षण में।

एक दिन वो भी आया जब नवीन नियुक्तियाँ खुलीं और अधिक छात्रसंख्या व एकल विद्यालय होने के कारण उन्हें एक सहायक अध्यापक मिले– मास्टर तैयारीलाल। सूने पड़े एकल विद्यालय में नवीन अध्यापक की पौध लगने की प्रसन्नता में निष्ठा मैडम ने मास्टर तैयारीलाल की जॉइनिंग पर उल्टे उन्हें मिठाई खिलायी। वो प्रसन्न थीं कि अब कक्षा में हरदम कम से एक अध्यापक तो रहेगा ही और बच्चों के प्रदर्शन में सुधार आएगा।

मास्टर तैयारीलाल दो बार आईएएस मेन एग्जाम फेल थे और तीसरी बार की तैयारी कर रहे थे। तीसरी बार एग्जाम देने की या फेल होने की इसका अनुमान आप ही लोग लगा लीजिए। लेकिन आलम ये था कि वो स्वयं को एक अध्यापक कहलाने में शर्म और आईएएस प्री पास कहलाने में गर्व महसूस करते थे।

मास्टर तैयारीलाल ने जिस दिन विद्यालय में जॉइन किया उसी दिन से विद्यालय में अध्ययन के नये प्रतिमान गढ़े जाने लगे। बच्चों के अध्ययन के नहीं जनाब बल्कि तैयारीलाल जी के स्वअध्ययन के। वो कक्षा में जाते और बच्चों को नकल देकर स्वयं मोटी–मोटी किताबें पढ़ने में लग जाते। निष्ठा मैडम ने एक दिन उनसे कहा कि ढेरों परीक्षाएँ पास करके और हाईकोर्ट से लेकर सुप्रीमकोर्ट तक केस लड़कर आपके बैच की नौकरी लगी है। इसके साथ कुछ तो इंसाफ कीजिए। तो तैयारीलाल जी का कथन था कि मैडम जी देखो आप तो बन गयीं मास्टरनी और उसके बाद आगे बढ़ने की सोची नहीं। लेकिन मेरा भविष्य तो उज्जवल है कल को मैं बड़ा अधिकारी बनूँगा और मेरी शिकायत आपको बीईओ से करनी हो या बीएसए से किसी से भी कर देना मैं डरता नहीं हूँ। क्योंकि मुझे पता है कि मैं बीएसए से भी बड़ा अधिकारी बनूँगा। कल को वो भी मेरे सामने सर–सर कहते हुए घूमेंगे।

घमण्ड से भरे मास्टर तैयारीलाल को समझाने की निष्ठा मैडम ने अनेकों कोशिशें अनेकों महीनों तक कीं। लेकिन मजाल तो है कि मास्टर तैयारीलाल जी के व्यवहार में तिल भर भी परिवर्तन आया हो।

जिस दिन तैयारीलाल जी आईएएस बनने के लिए ओवरएज हो गये तब निष्ठा मैडम ने उनसे कहा कि सर अब तो कम से कम बच्चों को पढ़ाइए। तो तैयारीलाल जी का उत्तर था कि मैडम आईएएस बनने की एज निकली है लेकिन पीईएस बनने की नहीं। आपने बच्चों को पढ़ाने की कह कहकर मेरा बड़ा मानसिक शोषण किया है। इसी तनाव में मेरी तैयारी में व्यवधान पड़ता था। अब मेरा एक ही लक्ष्य है आपका अधिकारी बनकर आपकी नौकरी छीनना। आप चली जाइए मेरे सामने से और मेरे अधिकारी बनने में और रोड़े न अटकाइए।

बेचारी निष्ठा मैडम उस दिन को कोस रही हैं जब तैयारीलाल जी उनके विद्यालय जॉइन किए थे। गाँव की आबादी अधिक है नहीं इसलिए बच्चे 60 से अधिक हो नहीं पा रहे हैं। दूजे तैयारीलाल के आने से अब विद्यालय एकल नहीं रह गया है। इसलिए कोई अन्य अध्यापक आने की सम्भावनाएँ समाप्त हो गयी हैं।

निष्ठा मैडम को अभी–अभी एनपीआरसी ने फोन करके कहा है कि जनसंख्या दिवस पर रैली निकलवाकर गाँव को जनसंख्या न बढ़ाने के प्रति जागरूक कीजिए। निष्ठा मैडम असमंजस में हैं कि क्या रैली न निकालकर जागरूकता फैलने से रोकी जाए ताकि जनसंख्या बढ़ने से बच्चे बढ़ें और कोई अन्य अध्यापक आए। अचानक से मन में विचार आया कि यदि अगला भी तैयारीलाल जी जैसा मिला तो। इस विचार की कल्पना से ही डरी हुई निष्ठा मैडम निडर होकर पूरे गाँव में जनता को जनसंख्या के प्रति जागरूक करने निकल गयी हैं।

प्रान्जल सक्सेना

माह की सर्वश्रेष्ठ ब्लॉग पोस्ट

महामानव के विदाई के क्षण

मृत्यु भी अटल सत्य है न चाहते हुए भी जो भी इस संसार में आता है उसे अपनी यात्रा पूर्ण कर एक दिन अपने धाम को लौटना होता है। इस जीवन रूपी यात्रा में सफलता और असफलता का पैमाना सिर्फ आपको चाहने वालों की फेहरिस्त है और उनकी वो दुआएँ एवं शुभकामनाएँ थीं जो आज दलगत राजनीति, सम्प्रदाय वर्ग से ऊपर उठकर श्री अटल जी को मिल रही थीं..

देश के प्रधानमंत्री रहे, शानदार कवि, ओजस्वी वक्ता, भारत रत्न से सम्मानित हुए और इस सबसे अलग वो सम्मान जो किसी को नहीं मिलता वह सभी के लिए सम्मानित है वह सभी को प्रिय हैं। इसके अलावा मुझे नहीं लगता कोई व्यक्ति ईश्वर से कुछ और भी चाहता होगा। उन्होंने सब कुछ पा लिया लम्बे समय से गम्भीर रूप से अस्वस्थ होने के बावजूद मृत्यु को इंतजार के लिए कह दिया।

शायद उन्हें 15 अगस्त को तिरंगा फहरते देखने की अभिलाषा थी..... अब विदाई का समय है वह लाइफ सपोर्ट सिस्टम पर थे। मैं हरगिज दुखी नही हूँ बल्कि आतुर हूँ। जब रथ से वह अपने धाम को जाएँगे खड़े होकर तालियाँ बजाकर उस महामानव को शानदार विदाई देने के लिये..!!

अंत में अटल जी की इन पंक्तियों के साथ उन्हें नमन करती हूँ ....

''मैं जी भर जिया, मैं मन से मरूँ
लौटकर आऊँगा,कूच से क्यों डरूँ?''

http://shikshansamvad.blogspot.com/2018/08/blog-post_96.html

लेखिका
सुषमा त्रिपाठी,
प्रधानाध्यापिका,
प्राथमिक विद्यालय रुद्रपुर,
विकास खण्ड–खजनी,
जनपद–गोरखपुर।

माह का मिशन

वरूआ वचन

नवरात्रि का व्रत केवल कन्या जिमाने से ही पूर्ण नहीं होता। कम से कम एक वरुआ(लड़का) तो भोज में बिठाना ही पड़ता है। प्राथमिक विद्यालयों में तो अधिकतर बच्चे गली–मोहल्लों में कन्या–वरूआ बनकर दावत खाने जाते हैं। गाँव में इस त्यौहार का बड़ा जोर रहता है।

बचपन में इन वरूओं का कन्याओं के प्रति कोई भेद नहीं होता। लेकिन जैसे–जैसे बढ़ती आयु के वरूओं को दूषित समाज की हवा लगती है। कन्याओं के प्रति जागीरदारी सोच का उद्‌भव होने लगता है। जिसकी परिणति महिलाओं के शोषण से होती है।

इसलिए आवश्यक है कि इन वरूओं में कन्या सम्मान के बीज बचपन से बो दिए जाएँ। अतः इस माह हम अपने–अपने विद्यालयों में वरूआ अर्थात लड़कों से ये वचन लेंगे कि वे समस्त नारी जाति का आजीवन सम्मान करेंगे। जैसा सम्मान वो अपनी माँ–बहन के प्रति चाहते हैं वैसा सम्मान वे अन्य कन्याओं व महिलाओं के साथ भी करेंगे। साथ ही ये भी वचन लें कि यदि वे किसी नारी के साथ अत्याचार होते देखें तो वे शांत नहीं रहेंगे अपितु यथाशक्ति उसका विरोध करेंगे।

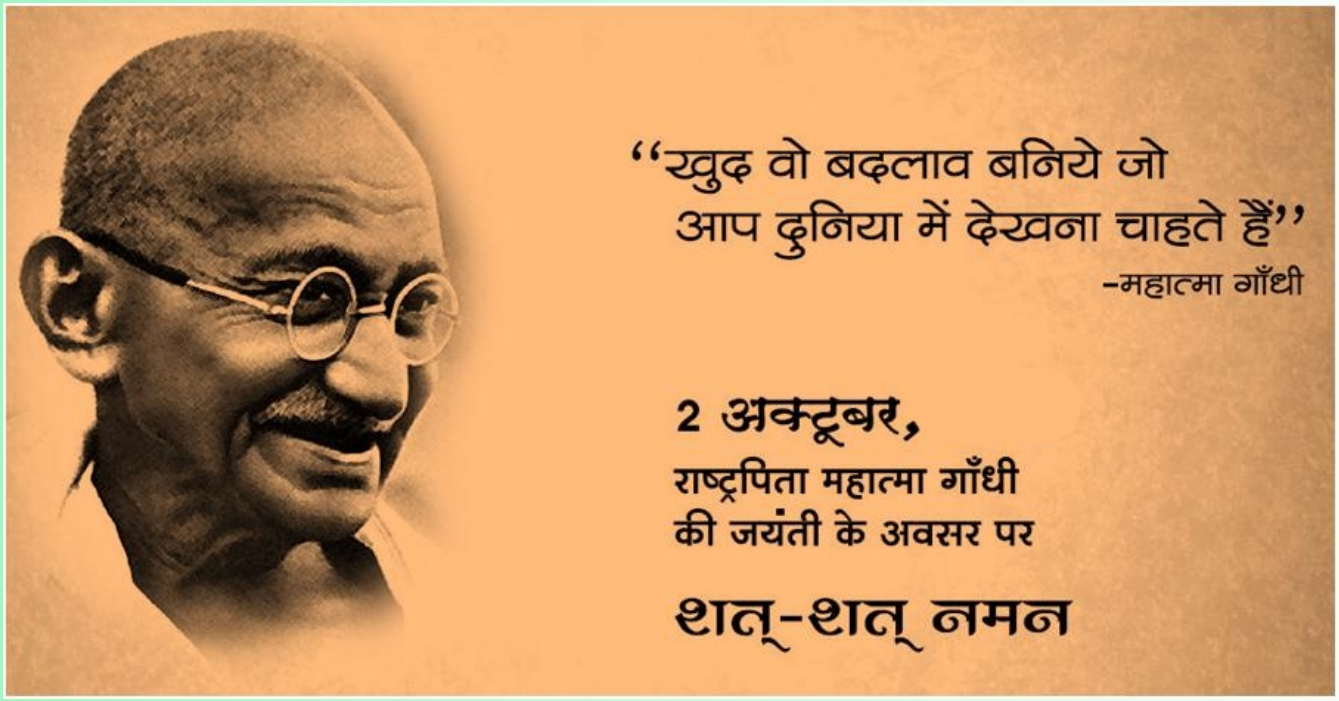

बात शिक्षिकाओं की मेरा अनुभव एक शिक्षिका के रूप में।

मेरे खट्टे–मीठे अनुभवों ने मुझे एक नई दिशा दी है। कहते हैं कि ''कड़वे अनुभव'' सबसे अधिक सीख देते हैं और मेरे साथ भी कुछ ऐसा ही हुआ। मैं आप सभी से अपने अनुभव साझा कर रही हूँ।

मैं एक शिक्षिका हूँ, इससे पहले कि मैं अपने बच्चों की अच्छी दोस्त भी हूँ। एक शिक्षक तभी सफल होता है, जब बच्चे अपनी रूचि, परेशानी और कमियाँ शिक्षकों से खुलकर बता सकें।

महिला शिक्षक और समाज–

महिला शिक्षक होने के नाते बच्चियों का खास जुड़ाव मुझसे है। अपनी छोटी–बड़ी सभी समस्याएँ वे मुझसे बाँटती है। कई बार तो मेरे सामने बड़ी चुनौतियाँ भी आयी हैं, जिसमें मैं दोराहों पर खड़ी होती हूँ। एक तरफ मेरी मासूम बच्चियाँ!! दूसरी तरफ समाज। मुझे लगता है कि सफल वही है जो बच्चियों से तालमेल बिठाने की कोशिश करे और बिना कुछ कहे उनके मन की बात जान सकें। आज के समाज के बिगड़ते स्वरूप में जहाँ बच्चियों के साथ दुर्व्यवहार और कुकृत्य हो रहे हैं, वहीं बच्चियों को सतर्क रहने की जरूरत है।

आज के समाज को बिगड़ने से बचा जा सकता है।

बालिका शिक्षा और मैं–

मेरे विद्यालय में कार्यभार ग्रहण के बाद, मैंने गाँव की बच्चियों की शिक्षा को सर्वोपरि माना। मैंने पाया कि बच्चियाँ पुरूष अध्यापकों से बेझिझक वार्तालाप नहीं कर सकती और न ही उनसे सभी परेशानी बता सकती हैं। ऐसे में शिक्षिका का फर्ज बनता है कि वे उन्हें ऐसा माहौल दे, जिसमें उनका सर्वांगीण विकास सम्भव हो। इसलिए विद्यालय में बच्चियों की शिक्षा के स्तर को सुधारने के साथ–साथ मैंने सर्वप्रथम अनपढ़ अभिभावकों को बच्चियों के माध्यम से ही हस्ताक्षर एवं पूरा पता लिखना सिखलाया। इसके उपरांत गाँव की बच्चियाँ, जो किन्हीं कारणों से बीच में ही पढाई छोड़ चुकी हैं, उन्हें भी हफ्ते में दो दिन पढ़ाने का काम शुरू किया। जिसमें मैं लगभग सफल हूँ।

प्राथमिक स्तर पर शिक्षिका–

प्रारंभिक शिक्षा के दौरान छोटे बच्चे महिला शिक्षकों के साथ अधिक सहज महसूस करते हैं। क्योंकि छोटे बच्चे अपनी माँ से अत्याधिक जुड़े होते हैं और पारिवारिक परिवेश के बाद जब बच्चा विद्यालयी परिवेश में प्रवेश करते हैं तो उन्हें अपनी माँ जैसा ही कोई चाहिए होता है। जिसके पास जाकर वे अपना प्यार–दुलार दिखा सकें। बच्चों की प्रत्येक क्रियाकलाप फिर आप पर केन्द्रित हो जाती है। तब न चाहकर भी आप बच्चों से घुल–मिल जाते हैं। जब मैं छोटे–छोटे बच्चों की कक्षा में प्रवेश करती हूँ तो मेरा अभिवादन करने की बजाय बच्चे अपनी अपनी शिकायतें लेकर आ जाते हैं। मैंने उनके चेहरे पर सहजता का भाव देखा है, जो वे मेरे जाने के बाद महसूस करते हैं।

ईश्वर मुझे हर जन्म में यही सौभाग्य दें!!!

प्रतिमा उपाध्याय
(प्र0 प्र0अ0)
प्राथमिक विद्यालय बर्रा द्वितीय,
विकास खण्ड–मार्टीनगंज.
जनपद–आजमगढ़।

कस्तूरबा विशेष के0जी0बी0वी0– प्रगति के पथ पर

वर्ष 2004–05 से शुरू हुए के0 जी0 बी0 वी0 आज 2018–19 तक लगातार अपने मंजिल, अस्तित्व और पहचान को लेकर अग्रसर हैं। शुरुआत जहाँ किराये के भवनों से हुई वहीं आज बाउंड्रीवाल से घिरी अपनी खुद की इमारत है। ड्रॉपआउट व कभी विद्यालय नहीं जाने वाली बालिकाओं को कक्षा 8 तक की शिक्षा देने वाली इमारत अब 12वीं तक की शिक्षा प्रदान करने के लिए तैयार हैं।

2004–05 में एक–एक बालिका के भय और आशंकाओं को दूर कर ज्ञान, विज्ञान, खेल व सांस्कृतिक कार्यक्रमों से आज 746 के0जी0बी0वी0 का बड़ा सा परिवार बन चुका है। निर्धन परिवार पिछड़ा क्षेत्र होने की पहचान से दाखिला लेने वाली बालिकाएँ आज प्रत्येक क्षेत्र में राष्ट्रीय व प्रादेशिक स्तर पर पदक प्राप्त कर अपनी उस पहचान को जमींदोज कर चुकी हैं।

अपने गाँव के गलियारों में खेलने वाली बालिकाएँ आज प्रादेशिक स्तर पर प्रतियोगिताओं में पदक जीतकर गले की शोभा बढ़ा रही हैं। विज्ञान की राष्ट्रीय–प्रादेशिक प्रदर्शनी में भी मॉडल का प्रदर्शन कर अपने स्कूल तथा जिले का नाम रोशन कर रही हैं। मीना बालिका, मीना शिक्षिका इन पुरस्कारों का पर्याय बन चुकी हैं तो वहीं दूसरी ओर रानी लक्ष्मीबाई पुरस्कार भी इस परिवार में शामिल होने वाले पुरस्कारों व पदकों की सूची में शामिल हो चुका है।

इन सभी बातों के अतिरिक्त शासन और प्रशासन इनकी दशा को बेहतर करने के लिए निरन्तर प्रयासरत हैं। राष्ट्रीय साक्षरता दर को बढ़ाने से शुरू हुआ सफर अब ''बेटी बचाओ,बेटी पढ़ाओ'' का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बन चुका है।

आज जहाँ शिक्षक शिक्षिकाओं को नई शिक्षण विधाओं से युक्त करने के लिए लगातार प्रशिक्षण कार्यक्रम चलते रहते हैं, वहीं बालिकाओं के लिए भी, आत्म रक्षा के लिए जूडो–कराटे, पुरानी बालिकाओं के अनुभव साझा करने के लिए एल्युमिनाई बैठकें, थिएटर कार्यशाला ,कम्प्यूटर शिक्षा द्वारा इनके अंदर की अन्य प्रतिभाओं को उकेरने का एक माध्यम हैं।

आज लगभग डेढ़ दशक पूरा कर चुकी के0जी0बी0वी0 परियोजना अब किसी भी स्तर पर अपने परिचय का मोहताज नहीं, जहाँ एक ओर के0जी0बी0वी0 से निकली बालिकाएँ अन्य शिक्षण संस्थाओं में के0जी0बी0वी0 का नाम रोशन कर रही हैं, वहीं दूसरी ओर इसमें शिक्षण कार्य कर रहे शिक्षक–शिक्षिकाएँ हर मंच पर अपनी उपस्थिति दर्ज करा रहे हैं। लगातार प्रयासों से अब के0जी0बी0वी0 एक ऐसा मंच बन चुका है जहाँ निश्चित रूप से इन विद्यालयों में पढ़ रही बालिकाओं के सपने अवश्य पूरे होंगे।

सच ही कहा गया है–

''मंजिलें उन्हीं को मिलती हैं, जिनके सपनों में जान होती है।
पंखों से कुछ नहीं होता, हौसलों से उड़ान होती है।''

योगेश वर्मा,
शिक्षक केजीबीवी कलान
विकास खंड–कलान,
जनपद–शाहजहाँपुर।

शिक्षण तकनीकी

स्मार्टफोन से बनाये स्मार्ट क्लास
App-Quiver- 3D coloring App

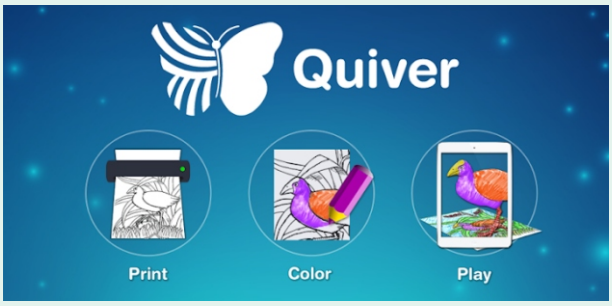

शिक्षा को रोचक व सरल बनाने के लिए मनुष्य ने कई तकनीकों का उपयोग किया। आदिमानव ने गुफाओं में जो गिनती की विधि विकसित कि वह आगे चलकर अबेकस, केलकुलेटर और कंप्यूटर तक जा पहुंचा। वैदिक काल में लिखने पढ़ने के लिए ताम्रपत्र–पांडुलिपियों का उपयोग, आज किताबों से टैबलेट, लैपटॉप और स्मार्टफोन तक जा पहुंचे। मनुष्य ने शिक्षण विकास में तकनीकों का उच्चतम उपयोग किया, जिसका मुख्य कारण विषय वस्तु को सरल रोचक व जिज्ञासा पूर्ण बनाना था। आज स्मार्टफोन के जमाने में कक्षा कक्ष में शिक्षण और रूचिकर और मजेदार बन गए हैं। आइए आपको एक ऐसे ही स्मार्टफोन मोबाइल ऐप के बारे में बताएं जिससे चित्रकला एक नए आयाम को छूती है। आप Google Play Store से Quiver ऐप को डाउनलोड करें। इस ऐप के माध्यम से बच्चों में रंगों के प्रति लगाव बढ़ता है। इस ऐप की खासियत है कि इसमें पहले से ही कुछ सुंदर चित्र बने हुए हैं, जिन्हें आप निशुल्क डाउनलोड करके प्रिंट करवा सकते हैं। अपितु कुछ चित्रों का शुल्क भी है। आप उन चित्रों को बच्चों को दें, उसमें रंग भरने को कहें। बच्चों को बताएं कि आप जिस भी रंग का प्रयोग करेंगे उसी रंग में यह चित्र जीवित हो उठेंगे। इस बात से बच्चों में जिज्ञासा बढ़ जाती है और कार्य को और अधिक सुंदरतापूर्ण करने लगते हैं। कार्य पूरा होने पर ऐप के माध्यम से चित्र को स्कैन करें। Scan करते ही 3डी इफेक्ट और एनिमेशन के साथ चित्र गति करने लगता है, जो बच्चों के लिए किसी चमत्कार से कम नहीं होता। हंसते खेलते बच्चों में रंगों के प्रति लगाव व बच्चों में रंगों के प्रति लगाव व कार्य को सुंदरता प्रदान करने की जागरूकता उत्पन्न होती है।

आप इस लिंक से ऐप डाउनलोड कर सकते हैं–

https://play.google.com/store/apps/details?id=com.puteko.colarmix

Quiver app को किस तरीके से उपयोग में लाएं इसके बारे में जानकारी प्राप्त करने के लिए दिए गए YouTube लिंक पर क्लिक करके देख सकते हैं–

https://youtu.be/KqAkM1zS3ow

तकनीकी के द्वारा,
शिक्षा का उजियारा।।

सामान्य ज्ञान

विज्ञान के दोहे

मटर उगाकर खेत, दिया नाम विज्ञान !
आनुवंशिकी के पिता, मेंडल हुये महान !

दूर देश के मित्रों से, बात कराता कौन !
ग्राहम बेल का शुक्रिया, दे गये टेलीफोन !

नीले लिटमस पत्र को, कर देते वह लाल !
कहते हैं हम अम्ल उसे, अंग न देना डाल !

किसी जीव का किस जगत, होता है स्थान !
ऐसा लीनियस ने दिया, वर्गीकरण विज्ञान !

जिसको चाहे भेज दो, अब तुम टेलीग्राम !
मारकोनी का शुक्रिया, उसको करो सलाम !

फिल्म देखने का जिसे, सचमुच में है शौक !
एडीसन ने पेश किया, उसको बाइस्कोप !

कैसी तारों की बस्ती, या उनका आलोक !
गैलिलियो ने बता दिया, देकर टेलीस्कोप !

चाहे तुम सूट सिलाओ, या सिलवाओ जीन्स !
एलियास देकर गये, ऐसी सिलाई मशीन !

अक्टूबर माह के महत्वपूर्ण दिवस

1 अक्टूबर	= अंतरराष्ट्रीय वृद्ध (वरिष्ठ नागरिक,प्रौढ़) दिवस, रक्तदान दिवस
2 अक्टूबर	= महात्मा गांधी जन्म दिवस (गांधी जयन्ती), लालबहादुर शास्त्री जन्म दिवस, अंतर्राष्ट्रीय अहिंसा दिवस, स्वच्छता दिवस
3 अक्टूबर	= विश्व प्रकृति दिवस, जर्मन एकीकरण दिवस
4 अक्टूबर	= विश्व पशु कल्याण दिवस
5 अक्टूबर	= विश्व शिक्षक (अध्यापक) दिवस (यूनेस्को), वरिष्ठ नागरिक दिवस
6 अक्टूबर	= विश्व वन्य प्राणी दिवस
8 अक्टूबर	= भारतीय वायु सेना दिवस (भारत), मुंशी प्रेमचंद स्मृति दिवस
9 अक्टूबर	= विश्व डाक दिवस
10 अक्टूबर	= राष्ट्रीय डाक दिवस, चरखा दिवस, विश्व मानसिक स्वास्थ्य दिवस
11 अक्टूबर	= लोकनायक जयप्रकाश नारायण जयंती
12 अक्टूबर	= विश्व दृष्टि दिवस, राममनोहर लोहिया स्मृति दिवस, विश्व प्राकृतिक आपदा रोकथाम दिवस, कोलंबस दिवस
14 अक्टूबर	= विश्व मानक दिवस
16 अक्टूबर	= विश्व खाद्य दिवस (एफएओ)
17 अक्टूबर	= अंतर्राष्ट्रीय गरीबी उन्मूलन दिवस
20 अक्टूबर	= अंतरराष्ट्रीय ऑस्टियोपोरोसिस दिवस
21 अक्टूबर	= आजाद हिन्द फौज स्थापना दिवस, विश्व आयोडीन न्यूनता विकार दिवस
24 अक्टूबर	= विश्व पोलियो दिवस, संयुक्त राष्ट्र संघ स्थापना दिवस, विश्व विकास सूचना दिवस
30 अक्टूबर	= विश्व मितव्ययता (बचत) दिवस
31 अक्टूबर	= इंदिरा गांधी की पुण्यतिथि, सरदार वल्लभभाई पटेल जयंती, संकल्प दिवस, राष्ट्रीय एकता दिवस
1 – 7 अक्टूबर	= वन्यजीव सप्ताह
2 – 8 अक्टूबर	= मद्यनिषेध सप्ताह
9 – 14 अक्टूबर	= राष्ट्रीय डाक सप्ताह
4 – 10 अक्टूबर	= विश्व अंतरिक्ष सप्ताह
24 – 30 अक्टूबर	= निरस्त्रीकरण सप्ताह

अक्टूबर का पहला सोमवार	= विश्व आवास दिवस
अक्टूबर का दूसरा बुधवार	= अंतर्राष्ट्रीय प्राकृतिक आपदा निवारण दिवस
अक्टूबर का दूसरा गुरुवार	= विश्व दृष्टि दिवस

योग–विशेष

वृक्षासन

योग एक प्राचीन भारतीय जीवन–पद्धति है। जिसमें शरीर, मन और आत्मा को एक साथ लाने (योग) का काम होता है। योग के माध्यम से शरीर, मन और मस्तिष्क को पूर्ण रूप से स्वस्थ किया जा सकता है। इन तीनों के स्वस्थ रहने से आप स्वयं को स्वस्थ महसूस करते हैं। योग के जरिए न सिर्फ बीमारियों का निदान किया जाता है, बल्कि इसे अपनाकर कई शारीरिक और मानसिक तकलीफों को भी दूर किया जा सकता है। योग प्रतिरक्षा प्रणाली को मजबूत बनाकर जीवन में नव–ऊर्जा का संचार करता है। योग शरीर को शक्तिशाली एवं लचीला बनाए रखता है साथ ही तनाव से भी छुटकारा दिलाता है जो रोजमर्रा की जिन्दगी के लिए आवश्यक है। योग आसन और प्राणायाम से तन और मन दोनों को क्रियाशील बनाए रखता हैं। आपके समक्ष एक आसन और प्राणायाम का वर्णन किया जा रहा है जिसको आप सभी स्वयं करें व विद्यालय पर बच्चों को अवश्य करायें, जिससे बच्चों का मन एकाग्र हो सके और साथ ही साथ प्रतिभा का परिष्कार करने में योग अहम भूमिका अदा कर सके।

वृक्षासन

संस्कृत शब्द वृक्ष को अंग्रेजी में ट्री कहते हैं। इसका पर्यायवाची शब्द है पेड़। वृक्षासन को करने से व्यक्ति की आकृति वृक्ष के समान नजर आती है इसीलिए इसे वृक्षासन कहते हैं।

अवधि–दोहराव

जब तक इस आसन की स्थिति में आसानी से संतुलन बनाकर रह सकते हैं सुविधानुसार उतने समय तक रहें। एक पैर से दो या तीन बार किया जा सकता है।

आसन की विधि

इस आसन को करते समय एक पैर को मोड़कर, दूसरे पैर को दृढ़ता से जमीन पर रखना चाहिए। एक पैर पर खड़े होकर हाथों को सिर के ऊपर लाना होता है। इस आसन को करते समय आपको यह महसूस करना चाहिए की आपका पैर एक जड़ है, जिस पर पेड़ के समान शरीर टिका हुआ है। अब अपने ध्यान को केंद्रित कर सामने की ओर देखें। सहज रूप से साँस लेते रहे। इस आसन को Tree Pose भी कहा जाता है, यह स्थिति वृक्षासन की है।

वृक्षासन से लाभ

इससे पैरों की स्थिरता और मजबूती का विकास होता है। यह स्नायुमण्डल का विकास कर पैरों को स्थिरता प्रदान करता है। यह कमर और कूल्हों के आस पास जमी अतिरिक्त चर्बी को हटाता है तथा दोनों ही अंग इससे मजबूत बने रहते हैं।

इसका अभ्यास करने से बच्चों के मन संतुलन बढ़ता है। मन में संतुलन होने से आत्मविश्वास और एकाग्रता का विकास होता। इसके अभ्यास करने से बच्चों के मन की चंचलता दूर होती हैं, इसे निरंतर करते रहने से शरीर और मन में सदा स्फूर्ति बनी रहती है।

सावधानियाँ

यह हमेशा ध्यान रखें, किसी भी आसन को करने से पहले योग विशेषज्ञ की राय और सहयोग अवश्य लें। इसकी एक वजह यह है कि अगर आप आसन को सही तरीके से नहीं कर रहे है तो यह आपके शरीर पर नकारात्मक असर भी डाल सकता है।

अंशुल अनंत,
प्रा०वि० मनपुरा,
ब्लॉक–किशनी, जनपद–मैनपुरी।

खेल–विशेष

फुटबॉल

फुटबॉल इस आधुनिक युग में विश्व का सबसे लोकप्रिय खेल है। इस खेल के सम्बन्ध में स्वामी विवेकानन्द जी ने कहा था कि तुम फुटबॉल के जरिए स्वर्ग के ज्यादा निकट होगे बजाय गीता का अध्ययन करने के''। यह स्वास्थ्यवर्धक, रोमांचकारी और चुनौतीपूर्ण खेल है। फुटबॉल मैदान में दो टीमों के 11–11 खिलाड़ियों द्वारा खेला जाने वाला आउटडोर खेल है। इस खेल में अधिकतम गोल करने वाली टीम विजेता होती है और कम गोल करने वाली टीम हार जाती है।

फुटबॉल खेल का अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर नियन्त्रण रखने हेतु अन्तर्राष्ट्रीय फुटबाल संघ (International Football Association) जिसे FIFA Federation International De Football Association भी कहा जाता है, का निर्माण किया गया। फुटबॉल जगत का सबसे लोकप्रिय प्रतियोगिता फीफा विश्व कप का आयोजन फीफा द्वारा हर चौथे वर्ष भव्य रूप से किया जाता है। भारत में यह खेल अखिल भारतीय फुटबॉल संघ (Al India Football Federation) द्वारा नियंत्रित किया जाता है। यह संघ भारत में फुटबॉल को बढ़ावा देने के लिए डूरंड कप, सन्तोष ट्राफी, रोवर्ल्ड कप, आई0एफ0ए0 शील्ड आदि महत्वपूर्ण राष्ट्रीय प्रतियोगितायें कराती है। इस खेल के प्रसिद्ध खिलाडियों में पेले ब्राजील, मैराडोना, मैसी (अर्जेण्टीना),जिडान (फ्रांस), वाइ चुंग भूटिया, सुनील क्षेत्री (भारत) हैं।

फुटबॉल खेल के नियम (Rules of Football)

1.खेल क्षेत्र (**Playing Field**) – फुटबॉल का खेलक्षेत्र आयताकार होता है। अन्तर्राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं लिए इसकी लम्बाई 110 से 120 गज (100 से 110 मीटर) होती है तथा चौड़ाई 70 से 80 गज (84 से 75 मीटर) होती है। इस खेलक्षेत्र में गोल क्षेत्र (Goal Area), पेनाल्टी क्षेत्र Penalty Area), कार्नर क्षेत्र (Corner Area), पेनाल्टी बिन्दु (PenaltySpot), मध्य वृत्त (Centre Circle) रेखांकित होना चाहिए।

2. गोल (**Goal**) – प्रत्येक गोल रेखा के मध्य पर दो आयताकार पोस्ट रखे जाते हैं जिसमें खिलाड़ियों द्वारा गोल किया जाता है। गोल पोस्ट का भीतरी किनारा 8 गज ऊर्ध्वाधर तथा तिज क्रासबार जो गोल पोस्ट द्वारा सीमित होती है। निचला छोर आठ फीट ऊंची होती है।

3. गेंद (**Ball**)– फुटबॉल गोलाकार तथा चमड़े से बना हुआ होता है। गेंद का घेरा 27 से 28 इंचभार 14 से 16 औंस (896 से 453 ग्राम) होनीं चाहिए।

4. खिलाड़ी की सामग्री (**Players Equipment**)– खिलाडियों की वेशभूषा विपक्षियों की वेशभूषा के रंग से भिन्न होनी चाहिए। गोलगीपर की वेशभूषा उसके साथियों, विपक्षियों तथा रेफरी के रंगों से मिन्न होनी चाहिए। फुटबॉल खिलाड़ी खेल में जूते का प्रयोग करते हैं।

5. टीम (**Team**) – एक फुटबॉल टीम में 11 खेलने वाले खिलाड़ी (गोलकीपर सहित) होते हैं। पाँच अतिरिक्त खिलाड़ियों के नाम दिये जा सकते हैं जिनमें से एक मैच में दो से अधिक खिलाड़ी नहीं बदले जा सकते।

6. निर्णायक (**Refree**) – फुटबॉल खेल में एक मुख्य रेफरी होता है। खेल के नियम सम्बन्धी उसके निर्णय अन्तिम होते हैं। रेफरी की सहायता के लिए दो लाइनमैन होते हैं।

7. खेल की अवधि (**Duration of Match**) – फुटबॉल खेल 45–45 मिनट का दो भाग में होता है। एक भाग के पश्चात 5 मिनट का मध्यांतर (Interval) होता है। रेफरी की सहमति से इसे बढ़ाया जा सकता है लेकिन 15 मिनट से ज्यादा नहीं हो सकता।

8. टॉस एवं खेल का आरम्भ (**Tass and Start of Game**) – दोनों टीमों के कप्तानों के द्वारा खेल आरम्भ करने (Kick off) अथवा खेल क्षेत्र का छोर (side) चुनने का निर्णय टॉस द्वारा होता है। खेल क्षेत्र के मध्य से विपक्षियों के क्षेत्र में किक मारकर खेल का आरम्भ किया जाता है।

9. फाउल (**Foul**)– फुटबॉल में जानबूझकर किये गये नियमों के उल्लंघन फाउल कहलाते हैं। जैसे किसी विपक्षी को लात मारना, खतरनाक ढंग से टकराना, विपक्षी को पकड़ना, गेंद को हॉथ से रोकना, गेंद को टच करना, विपक्षी को धक्का देना आदि फाउल करने पर उसके विरूद्ध स्वतंत्र किक (Free Kick) दी जाती है। यदि रक्षा कर रही टीम का कोई खिलाड़ी अपने पेनाल्टी क्षेत्र में कोई उल्लंघन कर दे तो उसके विरूद्ध पेनाल्टी किक दी जाती है। साथ ही साथ अस्वतंत्र किक (Indirect Free Kick) विपक्षी के बीच में भागना, गोलरक्षक गेंद को हाथ में लेकर चार से अधिक कदम ले ले, खतरनाक ढंग से खेले आदि उल्लंघन पर दिया जाता है। समय समय पर रेफरी द्वारा खेल नियमों का घोर उल्लंघन करने पर लाल कार्ड (Red card) तथा पीला कार्ड (Yelow card) का प्रयोग किया जाता है।

10. ऑफसाइड (**Off side**) – यदि कोई आक्रामक दल का खिलाड़ी अपनी ही टीम के किसी खिलाड़ी द्वारा खेली गई हो विपक्षी के आधे क्षेत्र में गेंद से आगे हो तथा विपक्षी टीम के कम से कम दो खिलाड़ी उससे आगे हों तो वह ऑफसाइड होता है।

11. थ्रो इन (**Throw In**) – जब गेंद साइड रेखा को पार कर जाय तो थ्रो इन का संकेत दिया जाता है। जिस स्थान से गेंद बाहर जाता है। वहाँ से विपक्षी टीम को थ्रो इन के लिए गेंद दी जाती है।

12. गोल किक (**Goal Kick**) – जब आक्रमण कर रहे खिलाड़ियों द्वारा गेंद रक्षा कर रही टीम की गोलरेखा के बाहर पहुंचा दी जाये तो रक्षा कर रही टीम को गोल किक दी जाती है।

13. अंक गणना (**Scoring**) – जब पूरी गेंद गोल रेखा को गोल पोस्टों अथवा स्तम्भों के बीच से भूमि पर से. हवा में तथा क्रास बार के नीचे से पार की जाये । तो गोल माना जाता है। विपक्षी टीम से अधिक गोल अर्जित करने वाली टीम विजयी होती हैं।

14. निर्णायक पेनाल्टी किक (**Penalty Shoot out**) – यह सामान्य अवधि के पश्चात 15–15 मिनट के अतिरिक्त खेल खेले जाने पर भी मैच बराबर रहे तो दोनों टीमों को पाँच–पाँच पेनाल्टी किक दिए जाते हैं। यह क्रम तब तक जारी रखा जाता है जब तक निर्णय न हो जाए।

15. फुटबॉल के कौशल (**Skills of Footbal**) – किक करना (Kicking- पास देना Passing, ड्रिबलिंग(Dribbling), गेंद सिर से खेलना (Heading) गोल रक्षण (Goal Keeping), गेंद रोकना (Trappling)

फुटबॉल खेलने के लाभ और महत्व (**Benefits and Importance of Football**)– फुटबॉल खिलाड़ियों को शारीरिक, मानसिक, सामाजिक और बौद्धिक रूप से स्वस्थ और मजबूत बनाता है। यह खेल बच्चों में अनुशासन और खेल भावना के विकास में सहायक है। यह खेल शारीरिक व्यायाम के साथ–साथ कौशल एकाग्रता स्तर और स्मरण शक्ति को सुधारने में मदद करता है। यह बच्चों के बीच नेतृत्व क्षमता और अच्छी सोच विकसित करके आत्मविश्वास के स्तर और आत्म सम्मान की भावना को बढ़ाता है। विद्यालयों में इस खेल के माध्यम से बच्चों में बहुमुखी व्यक्तित्व का विकास किया जा सकता है।

उमेश कुमार सिंह
पूर्व फुटबॉल कप्तान, BHU
प्री0वि0 करमपुर नवीन
शिक्षाक्षेत्र– बेरूआरबारी
जिला–बलिया (उ0प्र0)

मिशन–उपस्थिति

बेसिक के सरकारी विद्यालयों में पायी जाने वाली सबसे प्रमुख समस्या छात्र उपस्थिति के प्रतिशत को लेकर बनी रहती है। जहाँ प्राइवेट विद्यालयों में उपस्थिति 80% से अधिक हमेशा बनी रहती है वहीं बेसिक के विद्यालयों में यह घटकर औसतन 50 से 60% रह जाती है क्या कारण है कि बेसिक में इतनी कम उपस्थिति रहती है। साथ ही वे कौन सी राहे हैं, जिन पर चलकर छात्र उपस्थिति को 80% से अधिक पाया जा सकता है। इन समस्त तथ्यों पर विचार करने के लिए प्रदेश के विभिन्न जनपदों से ऐसे विद्यालयों के अनुभवों को साझा किया जा रहा है, जिन्होंने न स्वयं राहें बनायीं बल्कि उन राहों पर चलकर अपने विद्यालय की औसत उपस्थिति 80% से अधिक बनाए रखी। इस पर स्वयं ना कहकर उनके अनुभवों को उन्हीं के शब्दों में आपके समक्ष रखा जा रहा है।

शत–प्रतिशत छात्र उपस्थिति अभियान
प्रमुख चुनौती –बच्चों का नियमित विद्यालय न आना।
नवाचार–Mission hundred percent attendance महा अभियान

उद्देश्य–छात्र उपस्थिति 100% तक पहुँचाना
नवाचार प्रारम्भ करने की तिथि–1 जनवरी 2016
नवाचार प्रारम्भ के समय उपस्थिति––65 प्रतिशत
प्रेरणा प्रदान करने वाली पंक्ति
माना पग–पग पर फिसलन है, चढ़ना बहुत कठिन है।
किन्तु कभी मैं हार मान लूँ, यह कैसे मुमकिन है।

नवाचार का आधार
I - Information
E - Education
C - Communication

छात्र अनुपस्थिति के कारण–
1–स्कूल के प्रति अरुचि
2–कक्षा का खाली होना
3–अभिभावकों द्वारा बच्चों को घर मे रोके जाना।
4–अभिभावकों का विद्यालय से जुड़ाव न होना।
5–गाँव के पढ़े–लिखे व्यक्तियों का विद्यालय से कोई मतलब न होना।
6–अधिकारी, सम्भ्रांत व्यक्ति, जनप्रतिनिधि का भी विद्यालय से दूर–दूर तक कोई सम्बन्ध न होना।

इस तरह से जिस प्रकार से अनुपस्थिति के कई कारण हैं, तो अनुपस्थिति समाप्त करने के लिए कई प्रयास एक साथ करने पड़े लेकिन सबका आधार I E C ही था, मतलब यह कि जब हम कोई कार्य करते हैं तो उसकी समझ अभिभावकों तथा बच्चों तक पहुंचाने का प्रयास किया गया,

इसके लिए कम्युनिकेशन मजबूत किया गया माध्यम कई थे जैसे–अभिभावक मीटिंग, अभिभावक सम्पर्क, फोन, विभिन्न जयंतियाँ व कार्यक्रम, जनप्रतिनिधियों को आमंत्रित किया जाना इत्यादि।

इसके अलावा अन्य कुछ बिंदु निम्नलिखित हैं–

1–joyful व child centred teaching

2–बच्चों का जन्मदिन प्रत्येक माह के अंतिम शनिवार को अभिभावकों की उपस्थिति में मनाया जाना।

3–प्रत्येक माह 100 प्रतिशत उपस्थिति वाले बच्चों को उनके अभिभावकों की उपस्थिति में पुरस्कृत किया जाना।

4–टोली नायकों का चयन

5–दूरभाष से सम्पर्क

6–नोटिस भेजना

7–बीमार बच्चों से मिलने जाना।

उत्साहवर्धक परिणाम

सत्र 2016–17 की वार्षिक उपस्थिति–87 प्रतिशत

सत्र 2017–18 में वार्षिक उपस्थिति––91 प्रतिशत

विशेष सत्र 2017–18 में 235 कार्य दिवस में से 51 कार्य दिवस में छात्र उपस्थिति 100 प्रतिशत रही

निष्कर्षतः 100 प्रतिशत छात्र उपस्थिति का लक्ष्य प्राप्त हुआ।

संकलनकर्ता
विनोद कुमार
भदोही

अध्यापक का नामः– अजय सिंह
विद्यालय का नामः– प्राथमिक विद्यालय गजोधरपुर
विकासखंडः– सिधौली जनपद– सीतापुर

क्रमशः अगले अंक में.....

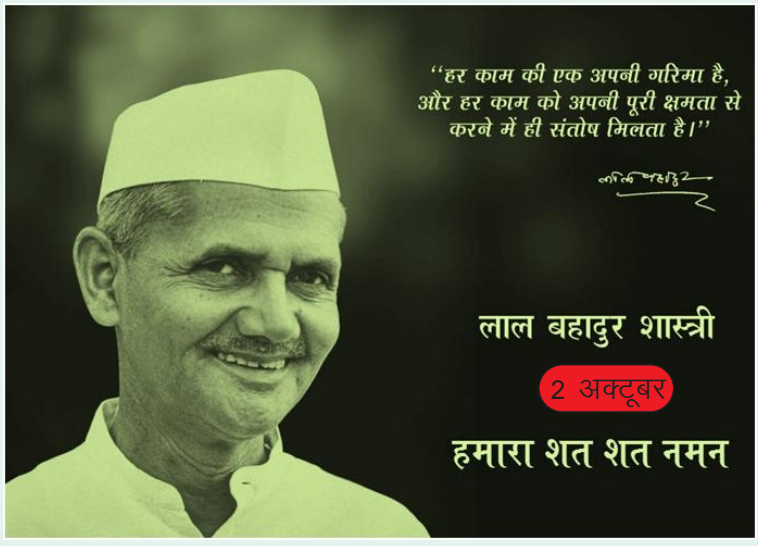

मिशन–हलचल / टीचर्स–क्लब कार्नर

रेड टेप मूवमेंट

मिशन शिक्षण संवाद के तत्वाधान में दिनाँक 8 सितम्बर को राइज फॉर क्लाइमेट अभियान में अपने जनपद और स्कूल में रेड टेप मूवमेंट चलाकर इस अभियान को अंतर्राष्ट्रीय पटल पर पर्यावरण क्षेत्र में मिशन शिक्षण संवाद के साथ ही बेसिक शिक्षा विभाग, उत्तर प्रदेश राज्य और अपने देश भारत को भी एक नयी पहचान दिलायी है।

इस कार्यक्रम में 700 से अधिक स्कूल में रेड टेप आयोजन की खबर है जिसमें 20 हजार से अधिक छात्रों अभिभावकों और बच्चों ने हिस्सा लिया। पूरे विश्व में इससे बड़ा कार्यक्रम नहीं हुआ है वैश्विक स्तर पर आपके प्रयास हर बड़े मंच तक पहुँच चुके हैं और विदेशों से अनेक लोगों के शुभकामना संदेश प्राप्त हुए हैं कई जनपदों में मीडिया ने इस कार्यक्रम को काफी अच्छा कवरेज दिया है। अंग्रेजी अखबारों में भी कार्यक्रम की खबर है। 350.org पर दिन भर रेड टेप कार्यक्रम की फोटो फ्लैश करती रहीं हमारे प्रयास सिपबामत जरिये सभी देशों में देखे गए। हमारी टीम ने 350 स्कूलों का लक्ष्य लिया था और आप सभी ने उससे दुगना पूरा करके दिखाया। आप सब की मेहनत से ही यह संभव हो सका है। इसके लिए आप सभी शिक्षक सहयोगी बधाई के पात्र हैं। आपके इस सराहनीय प्रयास एवं सहयोग के लिए मिशन शिक्षण संवाद परिवार आप सभी का आभारी है। आशा है भविष्य में भी आप ऐसे मानवीय सामाजिक आंदोलन में कदम से कदम मिलाकर मिशन शिक्षण संवाद के कार्यों को एक नयी पहचान देंगे।

विभिन्न जनपदों में मीडिया ने इसे काफी सराहा है अब तक प्राप्त सभी अखबारों की खबर आप तक प्रेषित है।

आपकी फोटो 350.org पर उनके द्वारा अपलोड की गईं हैं।

Congratulations Watch Red Tape Movement at International photo page of 350.Org at https://www.flickr.com/photos/350org/

सादर
अवनीन्द्र सिंह जादौन
कार्यक्रम प्रभारी

कार्यक्रम संयोजक
विमल कुमार एण्ड टीम मिशन शिक्षण संवाद

प्रभात मिश्रा
फाउंडर रेड टेप मूवमेंट

कार्यक्रम सहयोगी
मिशन शिक्षण संवाद परिवार

मिशन शिक्षण संवाद

अक्टूबर 2018

अक्टूबर 2018

रवि.		7	14	21	28
सोम.	1	8	15	22	29
मंगल.	2	9	16	23	30
बुध.	3	10	17	24	31
गुरु.	4	11	18	25	
शुक्र.	5	12	19	26	
शनि.	6	13	20	27	

पर्व व त्यौहार

अक्टूबर

02 मंगल. महात्मा गाँधी जन्म दिवस
17 बुध. दशहरा (महाअष्टमी)
18 गुरु. दशहरा (महानवमी)
19 शुक्र. दशहरा (विजयदशमी)
24 बुध. महर्षि बाल्मीकि जयन्ती

शिक्षा का उत्थान

मिशन शिक्षण संवाद

शिक्षक का सम्मान

Follow us on:

मिशन शिक्षण संवाद

डिस्क्लेमरः— मिशन शिक्षण संवाद की मासिक पत्रिका शिक्षण संवाद बेसिक शिक्षा के शिक्षकों का आपसी सीखने—सिखाने का स्वैच्छिक और स्वयंसेवी साझा प्रयास है। इस पत्रिका में अनमोल रत्न शिक्षकों के विवरण, शिक्षकों के लेखों, बाल कविताओं, बाल कहानियों से लेकर महापुरुषों के विचार, अधिकारीगण के लेख और सामान्य ज्ञान के प्रश्न भी सम्मिलित हैं। इस पत्रिका में प्रकाशित किसी भी लेख, कविता की मौलिकता और तथ्यात्मकता के लिए सम्बंधित स्तम्भकार उत्तरदायी होगा। यद्यपि पत्रिका में प्रकाशित सभी स्तम्भों में उच्चकोटि की गुणवत्ता का ध्यान रखा गया है तथापि किसी भी तथ्य के लिए संपादक मंडल दावा नहीं करता है। किसी भी सुझाव या शिकायत के लिए मिशन के ईमेल shikshansamvad@gmail.com या व्हाट्सएप्प नम्बर—9458278429 पर सम्पर्क कर सकते हैं।

1-फेसबुक पेज: https://m.facebook.com/shikshansamvad/

2- फेसबुक समूह: https://www.facebook.com/groups/1180108654646 49/

3- मिशन शिक्षण संवाद ब्लॉग : https://www.shikshansamvad.blogspot.in

4-Twitter(@shikshansamvad): https://twitter.com/shikshansamvad

5-यू-ट्यूब: https://www.youtube.com/channel/UCPbbM1f9CQuxLymELvGgPig

6— व्हाट्सएप नं0 : 9458278429

7— ई मेल : shikshansamvad@gmail.com

8— वेबसाइट : www.missionshikshansamvad.com

विमल कुमार
पूर्व माध्यमिक विद्यालय अमराहट,
राजपुर, कानपुर देहात